1 सितंबर 2021 ■ ₹ 15

फार्म एन फूड

जमीन में यकीन, यकीन में धन

गेंदा फूल की खेती

मशरूम उत्पादन
रोजगार का साधन

पशुओं में
खुरपकामुंहपका

बरसात में
न कटे मिट्टी

www.sarita.in/farm-n-food

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

पेरेंटिंग स्पैशल
गृहशोभा
शिशु की देखभाल से जुड़े मिथ
स्लिमिंग मेकअप
साइरा सेन

मुक्ता
हैल्दी बॉडी हैल्दी माइंड

सरस सलिल
हवा हो गई विकास की सुर्खियां

सरिता
युवा नेता हैं कहां

सत्यकथा
जुलाई 2017
₹ 35.00
सुपर चोर बंटी को 10 वर्ष सजा

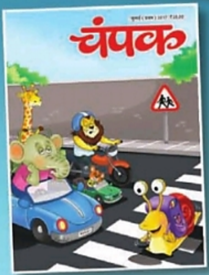

मनोहर कहानियां
कर्नल का शिकारी बेटा

फार्म एन फूड
डीजल इंजन खरीदने में धोखा न खाएं
बदहाल कृषि अर्थव्यवस्था

सुखी जीवन
संतुष्ट परिवार
समृद्ध घर की
मार्गदर्शक
पत्रिकाएं

हमारा उद्देश्य पाठकों को ऐसे नए युग में ले जाना है जहां कड़ी मेहनत, लगन व बुद्धि के बल से सफलता प्राप्त होती है न कि जाति, धर्म, पाखंड, जोड़तोड़ या भ्रष्टाचार की वजह से. यदि हम आत्मसम्मान के साथ सिर ऊंचा कर के जीना चाहते हैं तो हमें अपना भविष्य आत्मबल पर तय करना होगा.

दिल्ली प्रैस कार्यालय फोन नं. : 011-41398888, एक्सटेंशन नं. : 221, 119
ईमेल - subscription@delhipress.in / circulation@delhipressgroup.com

संपादकीय

आप के लिए

जुलाई, 2021 की घटना है. सिवनी के उगली थाना क्षेत्र के गांव कातोली में एक सुबह बापबेटे की मौत कुएं की जहरीली गैस की वजह से हो गई. वे दोनों खेत में धान रोपने गए थे. मोटर खराब होने पर बाप दुर्गाप्रसाद चौहान उसे सुधारने के लिए कुएं में उतरा, पर जब वापस नहीं आया तो कुछ देर बाद बेटा रंजीत चौहान भी कुएं में उतर गया. दोनों जहरीली गैस की वजह से बेहोश हो कर कुएं में गिर गए, जिस से उन की मौत हो गई.

दुर्गाप्रसाद चौहान की उम्र 45 साल थी और बेटा रंजीत चौहान तो महज 24 साल का था. देखते ही देखते एक परिवार के 2 कमाऊ मर्द अपनी जिंदगी से हाथ धो बैठे.

इसी तरह साल 2020 में उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले में कुएं में उतरे 5 लोगों की जहरीली गैस से मौत हो गई थी. वे सब एक बछड़े को बचाने के लिए कुएं में उतरे थे. इस दुखद हादसे में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मृतकों के आश्रितों को 2-2 लाख रुपए की माली मदद देने की घोषणा की थी.

लेकिन क्या यह 2 लाख रुपए की अदना सी मदद किसी परिवार के जख्मों पर मरहम लगाने के लिए काफी है? बिलकुल नहीं, क्योंकि किसी इनसान की मौत की भरपाई पैसे से पूरी नहीं हो सकती है. वैसे भी इस तरह की जहरीली गैस से हुई मौत में ज्यादातर जवान लोग ही शिकार बनते हैं.

पहली घटना में बाप 45 साल का और बेटा 24 साल का था. इस परिवार पर तो दुखों का पहाड़ टूट पड़ा होगा. वहां पर सरकारी मुआवजा ऊंट के मुंह में जीरा ही कहलाएगा. फिर वे दोनों कोई सरकारी काम नहीं करते थे कि कोई बंधीबंधाई पेंशन मिल जाए या परिवार के किसी सदस्य को नौकरी मिल जाए.

खेतीकिसानी का सब से दुखद पहलू यह है कि इस में मेहनत तो भरपूर होती है, पर मुनाफा कितना होगा और कब होगा, इस बात की कोई गारंटी नहीं होती है. कोई प्राकृतिक आपदा आई नहीं कि सब मिट्टी में मिल जाता है. उस पर इस तरह के हादसे किसी भी किसान परिवार को तोड़ने के लिए काफी होते हैं. सरकार को इन पहलुओं पर भी गंभीरता से ध्यान देना होगा, वरना लोग खेतीबारी से दूर हो जाएंगे.

इस में जो...

फार्म एन फूड 1 सितंबर 2021

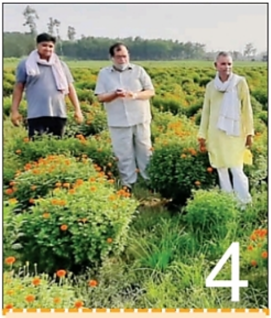

4
गेंदा फूल की खेती

फूलों की खेती कारोबारी नजरिए से बहुत ही अहम होती है. बहुत से समारोहों में अलगअलग किस्म के फूलों का इस्तेमाल किया जाता है. इन में से गेंदा भी खास है. अगर वैज्ञानिक तरीके से गेंदा की खेती की जाए और समय रहते इसे मंडियों में सप्लाई कर दिया जाए, तो बहुत अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है.

6 पशुओं में खुरपकामुंहपका रोग
8 मशरूम उत्पादन : किसान महिलाओं व युवाओं के लिए रोजगार का साधन
10 खेतों में करें चूहा प्रबंधन
11 खबरें खेतखलिहानों की
15 सवाल किसानों के
16 धान की फसल का कीटों से बचाव
18 सितंबर महीने में खेती से जुड़े जरूरी काम
20 लसोड़े का बनाएं अचार और सब्जियां

22
बरसात में न कटने दें खेत की मिट्टी

बारिश का मौसम फसलों के लिए बहुत जरूरी होता है. यह मिट्टी को नई जिंदगी देता है. पर ज्यादा बारिश होने पर पानी मिट्टी का कटाव कर के इस का उपजाऊपन बहा ले जाता है. इस से किसानों को बहुत नुकसान होता है, जिस पर नजर रखनी चाहिए.

फार्म एन फूड
1 सितंबर 2021, अंक: 349
संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

दिल्ली प्रैस
संस्थापक : विश्वनाथ
(1917-2002)

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. अन्य कार्यालय: 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. जी-3, एम्बीएस कोर्ट, 21, कनिंघम रोड, बेंगलुरु-560052. ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय). बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नयगांव क्रास रोड, वडाला, मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय). 16-ए, अमृता बनर्जी रोड (फर्स्ट फ्लोर), कालीघाट, नजदीक वासुश्री सिनेमा, कोलकाता-700026. 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, चेन्नई-600008. 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003. फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रूमार्ग, लखनऊ-226001. बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, भोपाल-462011. 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जिबीशन रोड, पटना-800001. गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, जयपुर-302006. जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, कोच्चि-682031.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित एवं ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

लेखकों से : छपने के लिए भेजे जाने वाले लेख वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना ठीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी रचनाएं ज्यादा पसंद की जाएंगी.

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ई मेल: article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रैस सूचनाओं के लिए ई मेल: invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल: editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल: subscription@delhipress.in

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें:
फोन नंबर : 91-11-41398888.
एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264.
(सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप नंबर : 08588843408
Email ID : subscription@delhipress.in

फार्म एन फूड पत्रिका की एक प्रति की कीमत 15 रु.
1 साल के लिए 589 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)
2 साल के लिए 1139 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)

मुख्य वितरक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि. ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Pte. Ltd., New Delhi-110055. India.
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE IN COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

गेंदा फूल की खेती

✻ प्रो. रवि प्रकाश मौर्य

गेंदा फूल को शादीब्याह, जन्मदिन, सरकारी व निजी संस्थानों में आयोजित विभिन्न समारोहों के अवसर पर, पंडाल, मंडपद्वार और गाड़ी, सेज आदि सजाने व अतिथियों के स्वागत के लिए माला, बुके, फूलदान सजाने में भी इस का प्रयोग किया जाता है.

गेंदा की खेती खरीफ, रबी व जायद तीनों मौसम में की जाती है. पूर्वांचल में गेंदा की खेती की काफी संभावनाएं हैं, बस यह ध्यान रखना है कि कब कौन सा त्योहार है, शादी के लग्न कब हैं, धार्मिक आयोजन कबकब होते है. इस को ध्यान में रख कर खेती की जाए, तो ज्यादा लाभदायक होगा.

गेंदा के औषधीय गुण भी बताए जाते हैं. खुजली, दिनाय और फोड़ा में हरी पत्ती का रस लगाने पर रोगाणुरोधी का काम करती है. साधारण कटने पर पत्तियों को मसल कर लगाने से खून का बहना रुक जाता है.

मिट्टी और खेत की तैयारी

गेंदा की खेती के लिए दोमट, मटियार दोमट व बलुआर दोमट भूमि सर्वोत्तम होती है. भूमि को समतल करने के बाद एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से और 2-3 बार देशी हल या कल्टीवेटर से जुताई कर के और पाटा चला कर मिट्टी को भुरभुरा बनाने व कंकड़पत्थर आदि को चुन कर बाहर निकाल दें और सुविधानुसार उचित आकार की क्यारियां बना दें.

बीज, नर्सरी व प्रसारण

गेंदा का प्रसारण बीज और कटिंग दोनों विधि से होता है. इस के लिए तकरीबन 100 ग्राम बीज प्रति बीघा (2,500 वर्गमीटर प्रति 1 हेक्टेयर का चौथाई भाग) में जरूरत होती है, जो 100 वर्गमीटर के बीज शैया में तैयार किया जाता है.

बीज शैया में बीज की गहराई 1 सैंटीमीटर से ज्यादा नहीं होनी चाहिए. जब कटिंग द्वारा गेंदा का प्रसारण किया जाता है, उस में ध्यान रखना चाहिए कि हमेशा कटिंग नए स्वस्थ पौधे से लें, जिस में मात्र 1-2 फूल खिला हो. कटिंग का आकार 4 इंच (10 सैमी.) लंबा होना चाहिए.

इस कटिंग पर रूटैक्स लगा कर बालू से भरे ट्रे में लगाना चाहिए. 20-22 दिन बाद इसे खेत में रोप देना चाहिए.

रोपाई का समय और दूरी

गेंदा फूल खरीफ, रबी, जायद तीनों सीजन में बाजार की मांग के अनुसार उगाया जाता है. लेकिन इस के लगाने का सही समय सितंबरअक्तूबर महीना है विभिन्न मौसम में अलगअलग दूरी पर गेंदा लगाया जाता है, जो निम्न तरह से है :

खरीफ (जून से जुलाई) : 60 × 45 सैमी.
रबी (सितंबरअक्तूबर) : 45 × 45 सैमी.
जायद (फरवरीमार्च) : 45 × 30 सैमी.

व्यावसायिक किस्में

पूसा नारंगी, पूसा वसंती और पूसा अर्पिता खास हैं.

खाद व उर्वरक

मिट्टी परीक्षण के आधार पर उर्वरक का इस्तेमाल करना चाहिए. खेत की तैयारी से पहले 50 क्विंटल कंपोस्ट प्रति बीघा की दर से मिट्टी में मिला दें. इस के बाद 33 किलोग्राम यूरिया, 125 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व 34 किलोग्राम म्यूरेट औफ पोटाश का इस्तेमाल प्रति बीघा की दर से खेत की आखिरी जुताई के समय मिट्टी में मिला दें. 16.5 किलोग्राम यूरिया रोपाई के एक माह बाद और इतनी ही मात्रा रोपाई के 2 माह बाद इस्तेमाल करें.

सिंचाई

खेत की नमी को देखते हुए 5-10 दिनों के अंतराल पर गेंदा में सिंचाई करनी चाहिए. यदि वर्षा हो जाए, तो सिंचाई नहीं करें.

पिंचिंग

रोपाई के 30-40 दिन के अंदर पौधे की मुख्य शाकीय कली को तोड़ देना चाहिए. इस क्रिया से यद्यपि फूल थोड़ा देर से आएंगे, लेकिन प्रति पौधा फूलों की संख्या और उपज में वृद्धि होती है.

निकाईगुड़ाई व खरपतवार प्रबंधन

तकरीबन 15-20 दिन पर जरूरत के मुताबिक निकाईगुड़ाई करनी चाहिए. इस से भूमि में हवा का संचार ठीक से होता है और खरपतवार नष्ट हो जाते हैं.

फूल की तुड़ाई

रोपाई के 60 से 70 दिन पर गेंदा में फूल आता है, जो 90 से 100 दिनों तक आता रहता है, इसलिए फूल की तुड़ाई/कटाई आमतौर पर सुबह या शाम के समय की जाती है.

फूल को थोड़ा डंठल के साथ तोड़ना/काटना सही होता है. फूल को डब्बा, जिस में चारों तरफ व नीचे में अखबार फैला कर रखना चाहिए और ऊपर से फिर अखबार से ढक कर बंद करना चाहिए.

पौध स्वास्थ्य प्रबंधन

लीफ हापर, रैड स्पाइडर इसे काफी नुकसान पहुंचाते हैं. इस की रोकथाम के लिए मैलाथियान 50 ईसी 2 मिलीलिटर प्रति लिटर पानी में घोल कर छिड़काव करें.

उपज

गेंदा फूल की उपज उस की देखभाल पर निर्भर करती है. आमतौर पर 30-35 क्विंटल फूल प्रति बीघा मिल जाते हैं. ■

पशुओं में खुरपकामुंहपका रोग

* डा. नरेश प्रसाद, डा. संजीव कुमार वर्मा, डा. मेघा पांडे, डा. नेमी चंद

पशुओं में खुरपकामुंहपका रोग यानी एफएमडी बेहद संक्रामक वायरल है. यह रोग वयस्क पशुओं में घातक नहीं होता है, लेकिन बछड़ों के लिए यह घातक होता है. यह गायभैंसों, बकरियों, भेड़ों, सूअरों और जुगाली करने वाले जंगली पशुओं को प्रभावित करता है. इस के कारण थूथन, मसूड़ों, अयन और अन्य गैर बालों वाले भागों पर छाले व घाव हो जाते हैं. यह सभी उम्र के पशुओं को प्रभावित करता है.

रोग का कारण

यह पिकोरनाविरिडाए परिवार के अपथो वायरस जाति की एफएमडी वायरस के कारण होता है. एफएमडी वायरस के 7 प्रकार के अलग सीरम होते हैं. भारत में एफएमडी ओ, ए और सी सीरम प्रकारों के कारण होता है. यह बहुत कठोर वायरस है और महीनों तक दूषित चारा, कपड़ा, वातावरण इत्यादि में जीवित रहता है.

महामारी विज्ञान

एफएमडी वायरस सभी उम्र के पशुओं को प्रभावित करता है और 100 फीसदी रोगकारक है. इस वायरस से वयस्कों में मृत्युदर कम है, लेकिन बछड़ों में 100 फीसदी है. इस का प्रकोप मुख्य रूप से मानसून के आगमन के दौरान होता है. सूअर एफएमडी वायरस के गुणक के रूप में काम करता है और इस से जुगाली करने वाले पशुओं को रोग फैल सकता है.

रोग संचरण

☛ रोगग्रस्त पशुओं के आवाजाही से, संक्रमित जानवरों के साथ संपर्क से और दूषित निर्जीव वस्तुओं (जूते, कपड़े, वाहन इत्यादि) के साथ संपर्क से रोग फैल सकता है.

☛ संक्रमित सांड़ के साथ गर्भाधान से, बछड़ों के द्वारा संक्रमित दूध पीने से, प्रभावित पशुओं से वायु संचरण से और रोगग्रस्त पशुओं के साथ लगे हुए श्रमिकों से स्वस्थ पशुओं को यह रोग फैल सकता है.

☛ संक्रमित जानवर का सभी स्राव और उत्सर्जन (दूध, मूत्र, लार, मल, वीर्य इत्यादि) से भी रोग फैल सकता है.

लक्षण

☛ खुरपकामुंहपका का लक्षण पशुओं में संक्रमण के 2-8 दिन के अंदर दिखाई देता है.

☛ इस बीमारी में पशु को तेज बुखार (103-105), भूख नहीं लगती और सुस्त रहता है. थूथन, दंत पैड, मसूड़ों, नाक, तालु, अयन, खुरों व चमड़ी के जोड़ों पर और अन्य गैर बालों वाले भागों पर छाला और घाव बन जाता है.

☛ इस में अत्यधिक लार निकलती है. लार रस्सी की तरह लंबाई में गिरती है और नाक से श्लेष्म निकलता है.

☛ खुरपकामुंहपका में पशु पैर को पटकता या ठोकर मारता है. खुरों में घाव की वजह से पशु लंगड़ाने लगता है.

☛ इस में पशु होंठ चटकाता और दांत घिसता है. जीभ के पार्श्व पृष्ठीय हिस्से पर अल्सर हो जाता है. शरीर की त्वचा मोटी और खुरदरी हो जाती है.

☛ इस रोग से गर्भपात हो जाता है और दूध उत्पादन में कमी आ जाती है.

☛ इस रोग से बछड़ों की मौत हो जाती है. बछड़ों में रोगकारक 100 फीसदी और मृत्युदर अधिक होती है.

उपचार

☛ इस का कोई विशेष इलाज नहीं है. सिर्फ परोक्ष संक्रमण को रोकने के लिए और लक्षणों का असर कम करने के लिए दवाएं दी जाती हैं.

☛ खुर व मुंह के घावों की लाल दवा (पोटैशियम परमैगनेट) के हलके घोल (1 फीसदी)/फिटकरी के 2 फीसदी घोल से दिन में 2 बार धोएं और खुरों पर बीटाडीन लगा कर पट्टी बांधें.

☛ धोने के बाद छालों पर बोरोग्लिसरीन का लेप लगाना लाभदायक होता है.

☛ इस दौरान पशुओं को मुलायम आहार (गेहूं का दलिया, बारीक कटा हुआ हरा चारा आदि) ही दें.

☛ तापरोधी, विटामिन बी कौंप्लैक्स इंजैक्शन, एंटीबायोटिक्स दवाएं डाक्टर की सलाह पर दें. ■

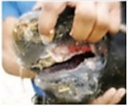

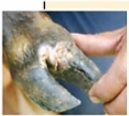

ऐसे करें रोग की रोकथाम

☛ सूचित अधिकारियों को जल्द से जल्द नियंत्रण के उपायों को आरंभ करना चाहिए, जिस से रोग के प्रसार को रोकने में मदद मिलेगी.

☛ संक्रमित क्षेत्रों से पशुओं के अन्य क्षेत्रों में प्रवेश पर रोक लगाएं.

☛ रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं के संपर्क से बचाएं.

☛ रोग के प्रसार को सीमित करने के लिए प्रभावित क्षेत्रों के चारों ओर रिग टीकाकरण कराएं.

☛ सभी दूषित वस्तुओं, परिसर और व्यक्ति का कीटाणुशोधन करें.

☛ लोगों के बीच जागरूकता पैदा करें.

☛ अपने पशुओं का नियमित टीकाकरण कराएं.

☛ प्रथम टीकाकरण 4 महीने पर, बूस्टर डोज प्रथम टीकाकरण से 6 महीने के बाद और पुनः टीकाकरण साल में 2 बार (पहला वर्षा ऋतु शुरू होने से पहले और दूसरा शीत ऋतु शुरू होने से पहले).

सभी देशवासियों को

75^{वें} स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएँ

जय हिंद

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

" देश की आज़ादी का अमृत महोत्सव कोटि-कोटि भारतवासियों का पर्व है, जिसमें पूरे भारत की परंपरा भी है, स्वाधीनता संग्राम की परछाई भी है और आज़ाद भारत की गौरवान्वित करने वाली प्रगति भी है। यह आयोजन हमारे इन 75 वर्षों की उपलब्धियों को दुनिया के सामने रखने का और अगले 25 वर्षों के विकास की रूपरेखा और संकल्प के लिए प्रेरणा लेने का अवसर है। "

- नरेन्द्र मोदी

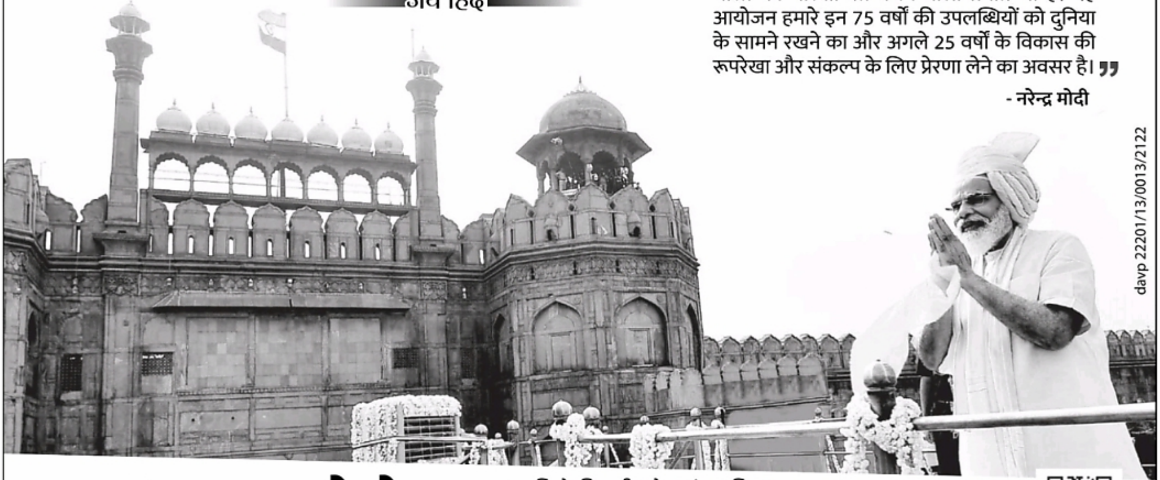

davp 22201/13/0013/2122

कण-कण में,
हर धड़कन में... **पहले देश**

लाल किले की प्राचीर से स्वतंत्रता दिवस
समारोह का प्रात:6:25 बजे से
दूरदर्शन द्वारा सीधा प्रसारण

#AmritMahotsav

क्यूआर कोड स्कैन करें और
आज़ादी के अमृत महोत्सव में भाग लें

मशरूम उत्पादन :

*** डा. प्रेम शंकर, डा. एसएन सिंह, डा. वीना सचान**

किसान महिलाओं व युवाओं

मशरूम की खेती अब पूरी दुनिया में लोकप्रिय हो रही है. मशरूम की खेती सीधे आजीविका में सुधार कर सकती है. इस का आर्थिक पोषण और औषधीय योगदान बहुत है. यह ग्रामीण विकास, महिलाओं और युवाओं के अनुकूल पेशे का माध्यम बन सकता है.

उत्पादन तकनीक

कंपोस्ट की तैयारी

कंपोस्ट कृत्रिम ढंग से बनाया गया वह माध्यम है, जिस से मशरूम की कायिक संरचना भोजन प्राप्त कर अपने फलनकाय के रूप में मशरूम पैदा करती है, अतः कंपोस्ट बनाने के पीछे मशरूम को उचित भोजन सामग्री उपलब्ध कराना निहित है. कंपोस्ट बनाने के लिए पक्के फर्श या विशेष कंपोस्टिंग शैड उपयोग में लाए जाते हैं. कंपोस्ट बनाने के लिए निम्नलिखित सामग्री प्रयोग में लाएं :

गेहूं का भूसा-1,000 किलोग्राम, अमोनियम सल्फेट व कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट-30 किलोग्राम, सुपर फास्फेट-10 किलोग्राम, पोटाश-10 किलोग्राम, यूरिया-10 किलोग्राम, जिप्सम-100 किलोग्राम, गेहूं का चोकर-50 किलोग्राम, फ्यूरोडान 500 ग्राम.

कंपोस्ट बनाना शुरू करने से 48 घंटे पहले भूसे की पतली तह पक्के फर्श पर बिछा कर उसे अच्छी तरह से पलट कर पानी के फव्वारे से तर कर दें.

आरंभ या शून्य

इस आरंभ में भूसे में नमी की मात्रा 75 फीसदी होनी चाहिए. इस नमीयुक्त भूसे में चोकर, कैल्शियम, यूरिया, म्यूरेट ऑफ पोटाश और सुपर फास्फेट अच्छी तरह मिला देते हैं. अब लकड़ी के पूर्व निर्मित तख्तों की मदद से भूसे का लगभग 1.5 मीटर चौड़ा, 1.25 मीटर ऊंचा किसी भी लंबाई का ढेर बनाएं.

ढेर बनाने के बाद लकड़ी के तख्तों को ढेर से अलग कर दें. 24 घंटे के भीतर ढेर का भीतरी तापमान 70-75 डिगरी सैंटीग्रेड तक होना चाहिए. इस ढेर की नमी बनाए रखने के लिए एक या 2 बार बाहरी सतह पर पानी का छिड़काव करें.

Mushroom Spawn
Mushroom Growing Kit & Training Centre
KHA, DISST. PANIPAT, INDIA
Phone No. : 0180-2003005
SURAJ AGRO
MUSHROOM FARM

पहली पलटाई

छठे दिन ढेर के बाहरी भाग को (15 सैंटीमीटर अंदर तक का) फर्श पर फैला दें, शेष भाग को दूसरी जगह फर्श पर फैला दें.

अब बाहरी भाग की कंपोस्ट को अंदर डाल कर व भीतरी भाग की कंपोस्ट को बाहर डाल कर लकड़ी के तख्तों की मदद से दोबारा ढेर बना कर तख्तों को अलग कर दें.

दूसरी पलटाई

10वें दिन बाहरी व भीतरी भाग को अलग कर के बाहरी भाग पर अच्छी तरह पानी का छिड़काव कर के ढेर को इस तरह बनाएं कि बाहरी भाग ढेर के भीतर व भीतरी भाग ढेर के बाहर पहुंच जाए.

तीसरी पलटाई

13वें दिन पहले की तरह पलटाई व ढेर का निर्माण करें व जिप्सम मिला दें.

चौथी पलटाई

16वें दिन पहले की तरह पलटाई व ढेर का निर्माण करें.

5वीं पलटाई

19वें दिन पहले की तरह पलटाई ढेर का निर्माण करें.

छठी पलटाई

22वें दिन पहले की तरह पलटाई का निर्माण करें व फ्यूरोडान मिला दें.

7वीं पलटाई

25वें दिन यदि कंपोस्ट अमोनिया गैस मुक्त है, तो कंपोस्ट बीजाई के लिए तैयार है, वरना 28वें दिन करें और बीजाई 30वें दिन करें.

बीजाई

बीजाई (स्पौनिंग) कंपोस्ट में स्पौन मिलाने के ढंग को कहते हैं. प्रति क्विंटल तैयार कंपोस्ट में 500 ग्राम से 750 ग्राम स्पौन

के लिए रोजगार का साधन

अचार
मशरूम उत्पादन के

(0.5-7.5 फीसदी की दर से) अच्छी प्रकार मिलाया जाता है. बीजाई की हुई कंपोस्ट को सैल्फ या पौलीथिन बैगों से हलका ढक कर रखना चाहिए. सैल्फ में 80-100 किलोग्राम/मीटर व बैग में 10-15 किलोग्राम कंपोस्ट भरते हैं.

बीजाई की हुई कंपोस्ट को निर्जीवीकृत अखबार द्वारा ढक देते हैं. अखबारों को इस्तेमाल में लाने से एक हफ्ते पहले फौर्मेलीन घोल से या वाष्प द्वारा 20 पौंड पर आधा घंटा निर्जीवीकरण कर लेना चाहिए.

यदि पौलीथिन बैग इस्तेमाल कर रहे हैं, तो बैग को ऊपर से मोड़ कर बंद कर दें. बीजाई के बाद फसल कक्ष का तापमान 22-23 डिगरी सैंटीग्रेड या अपेक्षित आर्द्रता 85-90 फीसदी बनाए रखना चाहिए. दिन में 2 बार हलके पानी का छिड़काव अखबार के ऊपर व फसल कक्ष की फर्श व दीवार पर करें.

बीजाई के 6-7 दिन बाद धागेनुमा फफूंदी की वृद्धि दिखाई देने लगती है, जो 12-15 दिन में कंपोस्ट की सतह को सफेद कर देते हैं. बिछे हुए अखबार के ऊपर फैली हुई फफूंदी को आवरण मृदा द्वारा ढक दिया जाता है.

आवरण मृदा (केसिंग मिट्टी)

आवरण मृदा का मतलब है, कंपोस्ट पर फैली हुई फफूंदी के ऊपर मृदा मिश्रण का स्तर बिछाना, जिस से नमी बनाए रखने व गैस के आदानप्रदान में कवक को मदद मिलती रहे.

आवरण मृदा बीमारियों और कीड़ों से मुक्त व इस का पीएच मान 7.5 से 7.8 होना चाहिए. अपने देश में निम्नलिखित सामग्री से आवरण मृदा तैयार की जाती है :

- गोबर की खाद (2 साल पुरानी) बगीचे की मिट्टी (2:1)
- गोबर की खाद (2 साल पुरानी) स्पेंट कंपोस्ट (1:1)

आवरण मृदा का पाश्चुरीकरण

आवरण मृदा को फौर्मेलीन द्वारा शोधित किया जा सकता है. आवरण मृदा का मिश्रण पक्के फर्श पर ढेर के रूप में रख कर उस में 4 प्रतिशत फौर्मेलीन का घोल पानी में बना कर अच्छी तरह मिला लें. उस के बाद ढेर को पौलीथिन चादर को हटा कर आवरण मृदा को उलटपलट कर फौर्मेलीन की गंध उड़ने के लिए छोड़ देते हैं.

इस तरह 3-4 दिन तक आवरण मृदा को उलटतेपलटते रहते हैं व पूरी तरह से ढेर को फौर्मेलीन गंधरहित कर लेते हैं. आवरण मृदा का शोधन वाष्प द्वारा 65 डिगरी सैंटीग्रेड पर 6-8 घंटे करना ज्यादा उपयोगी है.

आवरण मृदा का प्रयोग

आवरण मृदा की 4 सैंटीमीटर मोटी सतह कवक जाल युक्त कंपोस्ट के ऊपर बिछा दी जाती है. आवरण मृदा बिछाने के बाद 2 फीसदी फौर्मेलीन घोल का छिड़काव इस पर करना चाहिए और फसल कक्ष का तापमान 15-18 डिगरी सैंटीग्रेड और आर्द्रता 80-85 फीसदी कर देना जरूरी है. साथ ही, समुचित वायु संचार का इस अवस्था में प्रबंधन करना जरूरी होता है.

आवरण मृदा के ऊपर से दिन में एक या 2 बार पानी का हलका छिड़काव करना चाहिए.

फसल की तुड़ाई

आवरण मृदा बिछान के 12 से 18 दिन बाद (मशरूम) निकलना शुरू हो जाता है और 50-60 दिन तक निरंतर निकलते रहते हैं.

दिन में एक अथवा दो बार मशरूम को टोपी खुलने के पहले (जिस की परिधि एक से डेढ़ इंच हो), उंगलियों के सहारे ऐंठ कर निकाल लेना चाहिए. इतना ही नहीं, मशरूम खुल जाने और छतरी बन जाने पर मशरूम की क्वालिटी और बाजार में इस की कीमत कम हो जाती है.

पैदावार

दीर्घ अवधि से बनाई गई प्रति 100 किलोग्राम कंपोस्ट से 14 से 16 किलोग्राम मशरूम व इतनी ही मात्रा में पाश्चुरीकरण कंपोस्ट से 18 से 22 किलोग्राम मशरूम की पैदावार हासिल हो जाती है. ■

खेतों में करें चूहा प्रबंधन

✻ भानु प्रकाश राणा

घर हो या खेतखलिहान या फिर हो दुकान, चूहे हर जगह पाए जाते हैं, जो घरों में, दुकानों में सामान काट कर खा कर, नुकसान तो पहुंचाते ही हैं, खेतखलिहानों में भी ये बहुत नुकसान करते हैं.

खाद्य पदार्थों को नुकसान पहुंचाने वाले जीवों में चूहों का पहला स्थान है. एक चूहा एक दिन में तकरीबन 10-60 ग्राम तक अनाज खा सकता है.

ताजा आंकड़ों के मुताबिक, देश में कुल उत्पादित खाद्यान्न का तकरीबन 8 से 10 फीसदी चूहे ही बरबाद कर देते हैं और एक बड़ी आबादी के हिस्से का खाद्यान्न खा जाते हैं. साथ ही, खाने के साथसाथ अपने मलमूत्र से अनाज को भी दूषित करते हैं और बीमारियां भी फैलाते हैं.

मादा चूहा 1 साल में 8 से 10 बार बच्चा देती है और एक बार में 6 से 12 बच्चे दे सकती है. एक जोड़ी चूहे यदि नियंत्रित न हों, तो एक साल में 1,000 से 1,200 तक की संख्या बढ़ा सकते हैं.

चूहों की संख्या मईजून महीने में कम होती है, यही समय चूहा नियंत्रण अभियान के लिए सही है. क्षेत्र विशेष के लोगों को मिल कर इस की रोकथाम के लिए सामूहिक रूप से अभियान चलाना चाहिए.

जानकारी में पाया है कि चूहों के दांत बड़ी तेजी से बढ़ते हैं, इसीलिए आप ने देखा भी होगा कि ये चूहे घरों में कुछ न कुछ काटते रहते हैं.

इस समय अनाज भंडारण का भी समय है, इसलिए चूहों पर काबू पाना बहुत जरूरी है, नहीं तो वे भारी नुकसान पहुंचाएंगे.

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, सोहांव, बलिया के अध्यक्ष प्रो. रवि प्रकाश मौर्य ने बताया कि दुनियाभर में चूहों की 500 से ज्यादा प्रजातियां पाई जाती हैं. इन में से हमारे देश में 110 प्रजातियां मिलती हैं. इन्हें 4 कैटीगरी में बांटा गया है. घर का चूहा, पड़ोसी चूहा, खेत का चूहा व जंगली चूहा.

इन के प्रबंधन के लिए कम से कम 30 से 40 लोगों की टोली होनी चाहिए. पहले दिन बिलों को देखना चाहिए यानी निरीक्षण करना चाहिए और उन्हें मिट्टी से बंद कर 2 फुट का डंडा पहचान के लिए लगा देना चाहिए. दूसरे दिन खुले हुए बिलों के पास भुना दाना चना/चावल 10 ग्राम की कागज की पुड़िया बना कर रखनी चाहिए और बंद बिल के पास के डंडे हटा दें.

तीसरे दिन भी फिर से सादा चारा रखना चाहिए और चौथे दिन जहरीला चारा 8-10 ग्राम की कागज की पुड़िया बना कर प्रति बिल में शाम के समय रखनी चाहिए.

जहरीले चारे के लिए 56 ग्राम दाना भुना चना/चावल, 2 ग्राम जिंक फास्फाइड व 2 ग्राम सरसों का तेल लकड़ी से मिला कर बनाएं.

जहरीला चारा रखने के दूसरे दिन सुबह मरे हुए चूहों व बचे हुए जहरीले चारे को इकट्ठा कर के गड्ढा खोद कर दबा देना चाहिए.

चूहे को मीठा पसंद होता है. किसान खेतों में हो या घर पर, अनाज भंडारणगृह में जलेबी का पाक, जो आसानी से मिल जाता है, रूई की छोटीछोटी गोली बना कर डुबा दें. जब वे गोलियां पूरी तरह से भीग जाएं, तो चूहों के बिल के पास रख दें. चूहा उसे आसानी से खा लेता है. वह रुई की गोली चूहे की आंतों में फंस जाती है. कुछ समय के बाद चूहे की मौत हो जाती है.

इस के अलावा प्याज की खुशबू चूहों से बरदाश्त नहीं होती, इसलिए उन जगहों पर प्याज के टुकड़े डाल दें.

इतना ही नहीं, खाने में प्रयोग होने वाली लाल मिर्च चूहों को भगाने के लिए काफी कारगर है. जहां से चूहे ज्यादा आते हैं, वहां लाल मिर्च का पाउडर छिड़क दें. इनसानों के बाल से भी चूहे भागते हैं, क्योंकि इस को निगलने से इन की मौत हो जाती है, इसलिए इस के नजदीक आने से ये काफी डरते हैं. ■

एमएसपी नीति का कृषि कानूनों से कोई लेनादेना नहीं

नई दिल्ली : केंद्र सरकार ने कहा है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी नीति का केंद्रीय कृषि कानूनों से कोई लेनादेना नहीं है और किसान अपनी उपज अपने फायदे के अनुसार कहीं भी बेचने को स्वतंत्र हैं.

केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने राज्यसभा में एक सवाल के लिखित जवाब में यह बताया.

दरअसल, मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी (माकपा) के एक सदस्य इलावरम करीम ने सरकार से जानना चाहा था कि केंद्रीय कृषि कानूनों के लागू हो जाने के बाद इस की खरीदी में उद्योग जगत के एकाधिकार होने की सूरत में किसानों के लिए एमएसपी कैसे सुनिश्चित होगी.

इस के जवाब में कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि एमएसपी नीति का कृषि अधिनियम से कोई लेनादेना नहीं है. किसान अपनी उपज सरकारी खरीद एजेंसियों को एमएसपी या कृषि उत्पाद मंडी समिति (एपीएमसी) मंडियों में या संविदा खेती के माध्यम से या खुली मंडी में, उन के लिए जो भी फायदेमंद हो, बेचने के लिए स्वतंत्र हैं.

उन्होंने कहा कि भारत सरकार कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी) की सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक वर्ष दोनों फसल मौसमों में उचित आवश्यक गुणवत्ता (एफएक्यू) की 22 प्रमुख कृषि वस्तुओं के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा करती है.

उन्होंने यह भी कहा कि सरकार अपनी विभिन्न हस्तक्षेप योजनाओं के माध्यम से किसानों को लाभकारी मूल्य भी प्रदान करती है. एमएसपी पर खरीद केंद्र और राज्य एजेंसियों द्वारा सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत की जा रही है. इस के अलावा समग्र बाजार भी एमएसपी और सरकार के खरीद कार्यों की घोषणा को ले कर प्रतिक्रिया देता है, जिस के परिणामस्वरूप विभिन्न अधिसूचित फसलों के बिक्री मूल्य में वृद्धि होती है.

कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार बनने के बाद वर्ष 2014-15 से एमएसपी की खरीद बढ़ी है. वर्ष 2014-15 में तिलहन और कोपरा की खरीद 12,097.84 मीट्रिक टन से बढ़ कर वर्ष 2020-21 में 1,100,244.89 मीट्रिक टन हो गई है. इस के अलावा वर्ष 2014-15 में दलहन की खरीद भी 364,171 मीट्रिक टन से बढ़ कर वर्ष 2020-21 में 2,191,851.69 मीट्रिक टन हो गई है.

ज्ञात हो कि 3 कृषि कानूनों के खिलाफ विभिन्न किसान संगठन राजधानी नई दिल्ली की विभिन्न सीमाओं सहित देश के अलगअलग इलाकों में प्रदर्शन कर रहे हैं. उन की मांग तीनों कानूनों को निरस्त करने और एमएसपी के लिए कानून बनाने की है. किसानों के प्रदर्शन को समाप्त करने के लिए सरकार ने सक्रिय रूप से और लगातार किसान संघों के साथ काम किया और मुद्दों को हल करने के लिए किसान संघों से 11 दौर की बातचीत की. इस के बावजूद किसान संघ कृषि कानूनों को निरस्त करने की मांग के सिवा कभी कानूनों के प्रावधानों पर चर्चा के लिए सहमत नहीं हुए.

उन्होंने कहा कि सरकार किसान संघों से चर्चा के लिए हमेशा तैयार है और इस मुद्दे को हल करने के लिए आंदोलन कर रहे किसानों के साथ चर्चा के लिए वह तैयार रहेगी.

यह पूछे जाने पर कि क्या कृषि कानूनों को लागू करने से पहले सरकार ने किसानों और राज्य सरकारों से परामर्श किया था? इस पर उन्होंने कहा कि इस के लिए समयसमय पर विभिन्न समितियों और कार्यबलों का गठन किया गया था. शंकरलाल गुरु की अध्यक्षता में वर्ष 2000 में विशेषज्ञ समिति गठित की गई थी, वर्ष 2001 में अंतरमंत्रालयी कार्यबल का गठन किया गया था, जबकि वर्ष 2010 में कृषि विपणन के 10 प्रभारी राज्यमंत्रियों की अधिकार प्राप्त समिति का गठन किया गया था. ■

धान का समर्थन मूल्य बढ़ा, किसानों को होगा फायदा

प्रयागराज : दोआबा के किसानों के लिए खुशखबरी है. शासन ने इस बार धान के समर्थन मूल्य में 72 रुपए की वृद्धि की है. बीते वर्ष जहां सरकार ने किसानों के धान का समर्थन मूल्य 1868 रुपए निर्धारित किया था, वहीं इस बार 72 रुपए की वृद्धि करते हुए समर्थन मूल्य 1940 रुपए प्रति क्विंटल निर्धारित किया है. किसान अधिक से अधिक संख्या में क्रय केंद्रों पर धान की बिक्री कर सकें, इस के लिए औनलाइन पंजीयन का काम शुरू कर दिया गया है. आगामी एक नवंबर से जिले में धान की खरीद शुरू हो जाएगी.

जिले में धान का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है. कृषि विभाग के आंकड़ों के मुताबिक, तकरीबन 47 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में धान की खेती की गई है. प्रति वर्ष क्रय केंद्रों पर धान की शतप्रतिशत खरीद भी होती है. ऐसे में शासन की ओर से इस बार धान के समर्थन मूल्य में पिछले साल की तुलना में 72 रुपए क्विंटल की वृद्धि की गई है. इस से किसानों में खुशी का माहौल है.

शासन ने समर्थन मूल्य घोषित करने के साथ ही तैयारियों को समय रहते पूरा करने का दिशानिर्देश दिया है. डीएम सुजीत कुमार ने पारदर्शी धान खरीद के लिए अपर जिलाधिकारी मनोज को प्रभारी अधिकारी भी नामित कर दिया है. साथ ही, निर्देशित किया है कि जिले में धान खरीद को ले कर बड़े पैमाने पर प्रचारप्रसार कराया जाए. किसानों को धान बेचने के लिए औनलाइन पंजीयन कराने के लिए कहा जाए, ताकि धान की बिक्री में काश्तकारों को कोई दिक्कत न हो. साथ ही, बिचौलियों का दखल रोकने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाएं. ■

जानकारी

राज्यपाल ने औगैंनिक खेती की सलाह दी

औरैया : राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने किसानों को औगैंनिक उत्पाद तैयार करने की सलाह दी. साथ ही, उन्होंने कहा कि मिट्टी और विभिन्न फसलों के लिए मिट्टी में आवश्यक पोषक तत्त्वों की जानकारी ले कर किसान खेती करेंगे, तो किसानों की आमदनी बढ़ेगी.

उन्होंने यह भी कहा कि आधाअधूरा औगैंनिक उत्पाद बाजार में अपनी जगह नहीं बना पाता है, जबकि सौ फीसदी औगैंनिक उत्पाद मंडी में आसानी से अपनी जगह बना लेता है, इसलिए किसानों को पारंपरिक खेती के स्थान पर प्रयोग आधारित खेती करने की उन्होंने सलाह दी.

प्रदेश में गेहूं का उत्पादन अधिक होता है, इसलिए गेहूं के लिए बाजार कम हो जाता है. यदि गेहूं के साथ सब्जियां भी उगाएंगे, तो निश्चित तौर पर किसानों को उन की फसल के लिए बाजार आसानी से मिल जाएगा और अधिक मुनाफा भी होगा. इस के लिए विभागीय अधिकारी लक्ष्य निर्धारित कर किसानों को गाइड करें.

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने डेढ़ घंटे तक चले इस कार्यक्रम में फार्मर्स प्रोड्यूसर औैर्गनाइजेशन, महिला स्वयंसहायता समूह के सदस्यों के साथ सीधी बात की.

उन्होंने सदस्यों से आ रही कठिनाइयों के बारे में जानकारी ली. महिला स्वयंसहायता समूहों की सदस्याओं के उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए जिले के अधिकारियों को निर्देश भी दिए. साथ ही, यह भी कहा कि महिला स्वयंसहायता समूहों को आगे बढ़ा कर महिलाओं के स्वावलंबन में अहम भूमिका निभा सकते हैं. ■

योजना

हाथियों के लिए खरीदेगा धान

रायपुर : छत्तीसगढ़ वन विभाग जंगली हाथियों के लिए धान खरीदने की योजना बना रहा है, जो राज्य के उत्तरी हिस्सों के गांवों में नियमित रूप से घुसते हैं और संपत्ति को नुकसान पहुंचाते हैं. ये हाथी कई बार लोगों की जान भी ले लेते हैं.

हाथी आमतौर पर धान सहित भोजन की तलाश में गांवों में भटक जाते हैं और घरों व फसलों को नष्ट कर देते हैं. ऐसी घटनाओं से लोगों की जान भी चली जाती है. उन्हें मानव आवास से दूर चारा उपलब्ध कराने से मानव और पशु संघर्ष को कम करने में मदद मिल सकती है.

राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव) पीवी नरसिंह राव ने कहा कि हाथियों को गांवों में प्रवेश करने से रोकने के लिए धान को जंगलों में रखा जाएगा. शुरुआत में तो इसे कुछ गांवों में पायलट आधार पर लागू किया जाएगा और हाथियों के व्यवहार के आधार पर इसे दूसरे इलाकों में भी दोहराया जाएगा. ■

फैसला

मोलभाव कर बेच सकेंगे जमीन

चंडीगढ़ : सरकारी परियोजनाओं के लिए भूमि अधिग्रहण की कठिन प्रक्रिया से बचते हुए हरियाणा सरकार ने प्रदेश में भूमि बैंक बनाने का फैसला लिया है. अब किसान सहित अन्य लोग मजबूरी में नहीं, बल्कि मोलभाव कर के सीधे ही सरकार को अपनी जमीन बेच सकेंगे.

पिछले दिनों मुख्यमंत्री मनोहर लाल की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में इस नीति को मंजूरी मिल गई. किसान को जमीन बेचने के लिए निदेशक भूमि अभिलेख के औनलाइन पोर्टल पर आवेदन करना होगा. इस के लिए उन्हें मूल्य सहित भूमि का पूरा ब्योरा देना होगा.

किसान सरकार को किसी विशेष→

गेहूं का उत्पादन दोगुना चाहते हैं तो लगाएं यह किस्म

भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के एक स्वायत्त संस्थान, अघारकर अनुसंधान संस्थान ने एमएसीएस 6478 नामक गेहूं की एक ऐसी किस्म विकसित की है, जो उत्पादन को दोगुना तक बढ़ा सकती है. ज्यादा उत्पादन मतलब ज्यादा मुनाफा. वैज्ञानिक इसे गेहूं की सब से बेहतरीन किस्म मान रहे हैं.

गेहूं की इस किस्म की खास बात यह है कि इस में रतुआ रोग नहीं लगता. रतुआ की वजह से गेहूं की फसल बरबाद हो जाती है, जिस से किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है. ऐसे में ये नई किस्म किसानों को इस समस्या से छुटकारा दिला सकती है.

नव विकसित सामान्य गेहूं या ब्रेड गेहूं, जिसे उच्च उपज देने वाला एस्टिवम भी कहा जाता है, 110 दिनों में ही पक जाती है, जबकि दूसरी किस्में 120 से 130 दिनों में पक कर तैयार होती हैं.

रोग प्रतिरोधी क्षमता वाले इस के पौधे भी मजबूत होते हैं और इस के अनाज मध्यम आकार के होते हैं. इस की पौष्टिकता भी दूसरी फसलों से ज्यादा होती है. इस के अनाज में 14 प्रतिशत प्रोटीन, 44.1 पीपीएम जस्ता और 42.8 पीपीएम आयरन होता है.

प्रमाणित होने के लिए अघारकर अनुसंधान संस्थान ने महाराष्ट्र के जिला सतारा के कोरेगांव तहसील के कुछ गांवों में प्रयोग के तौर पर इस नई किस्म की खेती कराई, जिस का असर बहुत ही सकारात्मक रहा है.

नई किस्म के साथ 45-60 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की उपज मिल रही है, जबकि पहले औसत उपज 25-30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर थी. पहले ये किसान लोक 1, एचडी 2189 और अन्य दूसरी पुरानी किस्में लगाते थे. वैज्ञानिक काफी समय से गेहूं की ज्यादा उत्पादन वाली किस्म पर काम कर रहे हैं. ऐसे में इसे गेहूं का सब से अच्छा बीज भी कहा जा सकता है.

गेहूं रबी सीजन की प्रमुख फसल है. इस की बोआई अक्तूबर महीने से शुरू हो जाती है. भारत में गेहूं का उत्पादन भी साल दर साल बढ़ रहा है.

साल 1964-65 में जहां गेहूं का कुल उत्पादन 12.26 मिलियन टन था, वहीं साल 2019-20 में उत्पादन बढ़ कर 107.18 मिलियन टन तक पहुंच चुका है.

एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में साल 2025 तक यहां की आबादी तकरीबन 1.4 बिलियन हो सकती है, जिस के लिए गेहूं की मांग भी तकरीबन 117 मिलियन टन तक हो सकती है. इस के लिए उत्पादन बढ़ाना जरूरी है. ऐसे में बीज की नई किस्म इस में मददगार बन सकती है. ■

स्थान पर विकास परियोजना के लिए भूमि का चयन करने का परामर्श भी दे सकते हैं. इस नीति को बोर्डों व निगमों सहित सरकारी परियोजनाओं के लिए 'भूमि बैंक सृजित करने और विकास परियोजनाओं के लिए उन का निबटान नीति' कहा जाएगा.

यह देखा गया है कि कई बार भूमि मालिकों (खासकर विदेश में रहने वाले) को बाजार में बिचौलियों के दबाव या मजबूरन अपनी जमीन बेचनी पड़ती है, वहीं विभिन्न विभागों को दिनप्रतिदिन की जरूरतों को पूरा करने के लिए जलघरों, बिजली सबस्टेशनों, कालेज और ऊंची तालीम के अन्य विशिष्ट संस्थानों जैसी आवश्यक सेवाओं के लिए भूमि उपलब्ध करवाने में बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ता है. भूमि बैंक से योजनाएं जल्दी सिरे चढ़ेंगी, क्योंकि सरकार को पहले से पता होगा कि किस जिले में कितनी जमीन उस के पास है.

वहीं दूसरी ओर राजस्व विभाग द्वारा अपनी परियोजनाओं के लिए नगरपालिका सीमा के भीतर और उस से 2 मील की दूरी तक बनाने को इसे सरकारी विभागों को स्थानांतरित किया जा सकेगा. ■

गाजर घास खत्म करने के लिए केवीके द्वारा चलाया गया अभियान

–डा. आरके सिंह, डा. रुद्र प्रताप सिंह एवं उपमन्यु सिंह (कृषि विज्ञान केंद्र, कोटवा, आजमगढ़)

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, आजमगढ़ द्वारा 16वां राष्ट्रीय गाजर घास जागरूकता सप्ताह 16 अगस्त से 22 अगस्त 2021 में चलाया गया. इस अभियान के तहत 19 अगस्त को ग्राम लच्छिरामपुर विकास खंड रानी की सराय, जिला आजमगढ़ में जागरूकता कार्यक्रम किया गया. 'वांटेड सिर्फ मुरदा' की तर्ज पर गाजर घास का समूल नष्ट यानी पूरी तरह से खत्म करने के लिए नियंत्रण व प्रबंधन की समग्र विधियों पर विस्तार से चर्चा की गई.

केंद्र के प्रभारी अधिकारी डा. आरके सिंह ने किसानों को इस के विनाशक गुण जैसे प्राकृतिक जैव विविधता को नष्ट करना, सभी प्रकार की भूमियों, जलवायु व मौसम में बढ़ने, फूलने, फलने और पकने की क्षमता, बीज का तुरंत जमाव इस की खतरनाक खरपतवार की विशिष्टता है, जिस से इस का अनवरत फैलाव व फसलों में नुकसान जारी है और पर्यावरण को भी हानि पहुंचा रहा है.

डा. रुद्र प्रताप सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक फसल सुरक्षा ने खेतों में फैल चुके गाजर घास को फूल बनने से पहले हरी खाद बनाने, जैविक नियंत्रण के लिए मैक्सिकन बीटल (जाइगोग्रामा बाइकोलोराटा) का संरक्षण व संवर्धन, इस के पराग कणों से मनुष्यों में होने वाली दमा जैसी जानलेवा बीमारी, त्वचा स्पर्श से शरीर में एलर्जी व अन्य खतरनाक बीमारियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी. गांव में पशुशाला और घरों के दरवाजे के पास तक उगे हुए गाजर घास को देख कर वैज्ञानिकों ने काफी चिंता जाहिर की और लोगों को जागरूक किया.

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा योजना के तहत काम करने वाले मौसम प्रेक्षक उपमन्यु सिंह ने मौसम पूर्वानुमान की जानकारी से मिलने से होने वाले लाभ उठाने और सूचना प्राप्ति के लिए लोगों से जुड़ने के लिए किया.

इस अवसर पर अमित, सदानंद, अविनाश, अवध नारायण सहित कई प्रसार कार्यकर्ताओं के साथ 25 से अधिक किसान मौजूद रहे. ■

जानकारी

कृषि भूमि, पट्टी क्षेत्र में भी लग सकेंगे उद्योग

चंडीगढ़ : पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने राज्य में औद्योगिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के मकसद से ग्रीन और औरेंज जोन के उद्योगों के लिए चेंज औफ लैंड यूज यानी सीएलयू की मंजूरी दी है. रैड जोन वाले उद्योगों के लिए अलग जोन बनाने का आदेश जारी किया गया है.

मास्टर प्लान के खेती क्षेत्र में औद्योगिक गतिविधियों की अनुमति देने की नीति के तहत सीएलयू, लाल पट्टी या कम से कम 6 करम यानी 30-33 फुट पहुंच मार्ग की नजदीकी आबादी कम से कम 50 पक्के मकान के लिए क्रमश: 100 मीटर और 250 मीटर दूरी पर ग्रीन और औरेंज इंडस्ट्री के लिए लागू होने योग्य होगा.

वीडियो कौंफ्रैंसिंग से पंजाब रीजनल ऐंड टाउन प्लानिंग डवलपमैंट बोर्ड की 42वीं मीटिंग की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री, जो इस के चेयरमैन भी हैं, ने कहा कि सभी रैड, ग्रीन और औरेंज इंडस्ट्रियल जोन की इकाइयों द्वारा पंजाब प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड के निर्धारित नियमों का पालन किया जाना चाहिए, जीरो डिस्चार्ज या उपचारित पानी के इस्तेमाल के लिए संभावित उपयोगकर्ताओं की सहमति होनी चाहिए.

एक अन्य फैसले में मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने लुधियाना, जालंधर और अमृतसर की निगम हद से 4 किलोमीटर की दूरी, निगम वाले शहरों और क्लास-ए शहरों से 3 किलोमीटर समेत बाकी शहरों से 2 किलोमीटर की दूरी पर हाईवे के साथ मिक्स्ड लैंड यूज जोन में उद्योगों की स्थापना को अनुमति दे दी. यह फैसला औद्योगिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए राज्यभर में अधिकतम स्थान प्रदान करने में सहायक होगा. ■

जागरूकता

आधार से लिंक मोबाइल दर्ज कराएं किसान

मंझनपुर : सरकारी खरीद केंद्रों पर धान की बिक्री के लिए पंजीकरण 1 सितंबर से शुरू होगा. बाद में आने वाली असुविधाओं से बचने के लिए पंजीकरण के समय किसानों से वही मोबाइल नंबर दर्ज कराने के लिए कहा गया है, जो उन के आधारकार्ड से लिंक है.

आधार – आम आदमी का अधिकार

न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीफ की फसल में धान की खरीद एक अक्तूबर से शुरू होगी. इस के लिए एक सितंबर से पंजीकरण शुरू होगा. किसान एफसीएस की वैबसाइट पर औनलाइन पंजीकरण करा सकते हैं. इस के लिए वह सीएससी व इंटरनैट कैफे पर जा कर पंजीकरण करा सकते हैं.

किसान वही मोबाइल नंबर दर्ज कराएं, जो उन के आधारकार्ड से लिंक हैं. इस से एसएमएस द्वारा भेजे जाने वाले ओटीपी को भर कर पंजीकरण प्रक्रिया पूरी कराई जा सके. पंजीकरण में अपने बैंक का खाता नंबर, खतौनी, पहचानपत्र, खसरा के आधार पर खेत में बोआई की गई धान की फसल का हिस्सा भी भरें, ताकि समय से सत्यापन हो सके. ■

वैबिनार

पोषक खाद्य पदार्थ विषय पर प्रशिक्षण

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत अगस्त माह की थीम 'किसानों के लिए खाद्य और पोषण' के अंतर्गत अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना गृह विज्ञान (खाद्य एवं पोषण इकाई), अनुसंधान निदेशालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, केंद्रीय महिला कृषि संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिसा एवं आईसीआईसीआई ग्रामीण उद्यमिता प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 26 अगस्त, 2021 को 'कृषक समुदाय हेतु मेवाड़ क्षेत्र के पोषक खाद्य पदार्थ' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन औनलाइन गूगल मीट के माध्यम से किया गया.

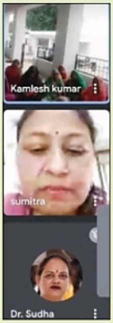

कार्यक्रम की शुरुआत डा. सुधा बाबेल, प्रोफैसर एवं इकाई समन्वयक, अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना गृह विज्ञान ने स्वागत उद्बोधन से की. उन्होंने मेवाड़ क्षेत्र में उपलब्ध खाद्य फसलों मक्का, कांगनी, कुलथ, शकरकंद, रतालू, सीताफल, जामुन आदि का महत्व बताया और इन के प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन आधारित उद्यम लगा कर आत्मनिर्भर बनने की बात कही.

आयोजन सचिव और संचालक डा. सुमित्रा मीणा ने भोज्य समूहों की जानकारी, विभिन्न आयुवर्ग की पोषक आवश्यकताओं के बारे में बताते हुए मेवाड़ क्षेत्र में उपलब्ध खाद्य पदार्थों से पोषण थाली बनाना सिखाया.

शिप्रा चेलावत ने कांगनी, पैठा और आंवला के मूल्य संवर्धित उत्पादों की जानकारी दी. देवेंद्र कुमार मेहता, प्रशिक्षण प्रभारी, आईसीआईसीआई ग्रामीण उद्यमिता प्रशिक्षण संस्थान, मावली ने प्रशिक्षणार्थियों को औनलाइन जोड़ने में सहायता प्रदान की.

प्रशिक्षण में खेमली पंचायत के विजनवास गांव की 30 किसान महिलाओं ने भाग लिया. ■

खुदरा उर्वरक विक्रेता प्राधिकारपत्र प्रशिक्षण संपन्न

DAYS TRAINING
ON
Dealer Certific

प्रसार शिक्षा निदेशालय, उदयपुर द्वारा आयोजित 15 दिवसीय खुदरा उर्वरक विक्रेता प्रशिक्षण के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि कुलपति डा. नरेंद्र सिंह राठौड़, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर ने अपने उद्बोधन में प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि वे सच्ची निष्ठा से अपने व्यवसाय के साथ किसानों को सही सुझाव दे कर अप्रत्यक्ष रूप से उन के लिए बदलाव अभिकर्ता के रूप में सहायता करें.

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में डा. नरेंद्र सिंह राठौड़ ने सभी प्रतिभागियों से आह्वान किया कि ज्ञान को सीखने की कोई उम्र नहीं होती है, अतः प्रतिभागियों को कृषि संबंधित नवीनतम साहित्य एवं विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के संपर्क में रहना चाहिए, ताकि कृषि में हो रहे नवाचारों द्वारा आप लोग किसानों को अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित कर सकते हैं. इस अवसर पर डा. नरेंद्र सिंह राठौड़ ने उर्वरकों के संतुलित उपयोग एवं मृदा परीक्षण के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए मृदा स्वास्थ्य कार्ड, पोषक तत्त्व प्रबंधन, समन्वित पोषक तत्त्व के लाभ, जैविक खेती और उस के लाभ, कार्बनिक खेती आदि के बारे में चर्चा की.

डा. नरेंद्र सिंह राठौड़ ने सीबीआईएनडब्ल्यू कौंसैप्ट पर बात करते हुए कस्टमाइज उर्वरक, संतुलित उर्वरक और समन्वित उर्वरक प्रबंधन के विभिन्न बिंदुओं पर प्रकाश डाला और नैनो फर्टिलाइज्जर और जल में घुलनशील उर्वरकों के महत्त्व पर चर्चा की. उन्होंने कृषि के 6 प्रमुख आयामों यथा मिट्टी, पानी, बीज, औजार, वातावरण एवं किसान के बारे में भी बताया और कहा कि किसान सर्वोपरि है और उस को ध्यान में रखते हुए उर्वरक विक्रेताओं को अपनी तैयारी करनी चाहिए.

इस अवसर पर प्रसार शिक्षा निदेशक डा. संपत लाल मूंदड़ा ने प्रशिक्षणार्थियों को उर्वरक उपयोग दक्षता बढ़ाने के उपाय सुझाए और टिकाऊ खेती समन्वित कृषि पद्धति की फसल विविधीकरण आदि विषयों पर जानकारी दी.

प्रशिक्षण के समापन समारोह में खुदरा उर्वरक विक्रेता प्रशिक्षण में भाग लेने वाले सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए.

प्रशिक्षण समन्वयक डा. लतिका व्यास ने बताया कि इस प्रशिक्षण में राज्य के विभिन्न जिलों के 38 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया, जिन्हें सैद्धांतिक व प्रायोगिक जानकारियां विश्वविद्यालय के विभिन्न कृषि वैज्ञानिकों और राज्य सरकार के अधिकारियों द्वारा प्रदान की गई.

प्रशिक्षण सहसमन्वयक डा. रतन लाल सोलंकी ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए इस प्रशिक्षण का लाभ किसानों तक पहुंचाने की अपील की. ■

जानकारी

खाद्य और पोषण है मूलभूत जरूरत

बस्ती : बदलते मौसमी वातावरण, बिगड़ती भूमि की संरचना, जोत का कम होना, बढ़ती आबादी का दबाव एक नई चुनौती की तरफ इशारा कर रहा है.

देश और प्रदेश में पोषणयुक्त खाद्य सुरक्षा को भविष्य की चुनौतियों से जोड़ते हुए पूर्वांचल के किसानों के लिए मक्का कहे जाने वाले आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के कुलपति डा. विजेंद्र सिंह ने विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सभी कृषि विज्ञान केंद्रों व शोध केंद्रों को निर्देशित किया कि जनपद की जलवायु और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार की कार्ययोजना तैयार करें, जिस से खेती की नवीनतम तकनीकों को किसानों के क्षेत्र तक पहुंचाएं. इस से उत्पादन बढ़ने के साथ ही साथ रोजगार का सृजन हो सके और देश का अन्नदाता पोषकयुक्त आहार स्वयं उपयोग करते हुए सभी को उपलब्ध करा सके.

FOOD AND NUTRITION FOR FARMERS

केंद्र के अध्यक्ष प्रो. एसएन सिंह ने अवगत कराया कि कुलपति डा. विजेंद्र सिंह के निर्देश पर केंद्र के प्रक्षेत्र पर तिल, मूंगफली और काला नमक धान की खेती कर बीज उत्पादन कराया जा रहा है. किसानों के हित में खाद्य पोषण सुरक्षा के उद्देश्य से 'भारत की आजादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर ग्राम भेलवल में गोष्ठी का आयोजन किया गया.

जनपद बस्ती को दलहनतिलहन में आत्मनिर्भर बनाने के मकसद से केंद्र के प्रक्षेत्र पर तिल, मूंगफली और अरहर की नवीनतम प्रजातियों का बीज उत्पादन किया जा रहा है, →

जो किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा और एकीकृत कृषि प्रणाली का प्रचारप्रसार किया जा रहा है, जिसे किसानों को एक ही प्रक्षेत्र में फसल, फलसब्जी, पशुपालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खीपालन आदि को अपना कर सालभर जैविक पोषणयुक्त आहार प्राप्त करने के साथ ही साथ स्वरोजगार कर के आय अर्जित कर सकते हैं.

भेलवल के किसानों व किसान महिलाओं के लिए खाद्य एवं पोषण पर एक गोष्ठी आयोजित की गई, जिस की अध्यक्षता ग्राम प्रधान सुमन लता सिंह ने की.

उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि महिलाओं में सब से ज्यादा पोषण की कमी रहती है, इसीलिए गांव स्तर पर समूह के माध्यम से जागरूकता लाने की आवश्यकता है और महिलाओं को स्वयं के स्वास्थ्य के साथ ही साथ परिवार के सभी सदस्यों को स्वस्थ रखने के सारे उपायों को अपनाना चाहिए,

इस गोष्ठी में गृह वैज्ञानिक डाक्टर वीना सचान ने मूंगफली, गुड़, तिल आदि से पोषक लड्डू निर्मित करने और उस के खाने के फायदे, पशुपालन विशेषज्ञ डाक्टर डीके श्रीवास्तव ने दूध का दैनिक आहार में महत्त्व व उन से निर्मित होने वाले विभिन्न उत्पाद, पौध रक्षा वैज्ञानिक डा. प्रेम शंकर ने शहद के पोषक तत्त्वों पर चर्चा करते हुए मधुमक्खीपालन की विस्तृत जानकारी दी.

फसल वैज्ञानिक डाक्टर आरबी सिंह ने काला नमक धान, मूंगफली, तिल, अलसी की प्रजातियों की उत्पादन तकनीक पर जानकारी दी.

इस कार्यक्रम में प्रगतिशील किसान रघुनाथ सिंह, अरविंद सिंह, गीता सिंह, अंजनी सिंह आदि उपस्थित रहे. ■

भानु प्रकाश राणा, अक्षय कुलश्रेष्ठ

‘खाद्य एवं पोषण’ पर गोष्ठी

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, सोहांव, बलिया के तत्त्वावधान में ‘आजादी का अमृत महोत्सव’ के अंतर्गत किसानों के लिए ‘खाद्य एवं पोषण’ पर एक गोष्ठी 26 अगस्त, 2021 को आयोजित की गई.

केंद्र के अध्यक्ष प्रो. रवि प्रकाश मौर्य ने जहर मुक्त खेती कर शुद्ध अन्न, सब्जी, फल आदि खाने की सलाह दी और कहा कि कोरोना के कारण पिछले 2 सालों से किसानों को फसलों, सब्जियों, फलों व फूलों की बिक्री में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है. मृदा स्वास्थ्य में गिरावट, कृषि मदों की बढ़ती कीमतें और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएं भी खेती में बाधक हैं. इस के लिए जलवायु को ध्यान में रख कर कृषि विविधीकरण अपना कर खाद्य एवं पोषण की पूर्ति करनी होगी.

डा. प्रेमलता श्रीवास्तव गृह विज्ञान विशेषज्ञ ने पोषण वाटिका एवं पोषक थाली पर प्रकाश डाला. डा. सोमेंद्र नाथ फसल विशेषज्ञ ने खाद्यान्न, दलहनतिलहन से मिलने वाले पोषण की जानकारी दी.

डा. मनोज कुमार आनुवांशिकी एवं फसल प्रजनन विशेषज्ञ ने फसलों की फोर्टीफाइड प्रजातियों पर प्रकाश डाला, वहीं हरिशंकर वर्मा ने फलसब्जियों के प्रसंस्करण पर जानकारी दी.

अंत में प्रक्षेत्र प्रवंधक धर्मेंद्र कुमार ने किसानों को प्रक्षेत्र का भ्रमण करा कर प्रक्षेत्र में लगी हलदी की जानकारी दी. गोष्ठी में वैज्ञानिकों सहित कुल 70 किसान व किसान महिलाओं ने भाग लिया. ■

धान की फसल में स्वास्थ्य प्रबंधन जरूरी --प्रो. रवि प्रकाश

इस बार इस कौलम के तहत धान की खेती की देखभाल के बारे में जानकारी दी गई है. आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद, सोहांव, बलिया के अध्यक्ष प्रो. रवि प्रकाश मौर्य ने धान की खेती करने वाले किसानों को समसामयिक सलाह दी.

इस समय पूर्वांचल में लगातार वर्षा, जल भराव के कारण धान की फसल से तना छेदक कीट, जीवाणु झुलसा व शीथ ब्लाइट रोग का प्रकोप हो सकता है. कीट व रोग की पहचान व प्रबंधन की जानकारी अवश्य रखनी चाहिए, जिस से समय रहते इस पर काबू पा सकें. तना छेटक कीट की मादा धान की पत्तियों पर समूह में अंडा देती हैं. अंडों से सूंड़ियां निकल कर तनों में घुस कर मुख्य गोभ को क्षति पहुंचाती हैं, जिस से बढ़वार की अवस्था में मृत गोभ और बालियां आने पर सफेद बाली दिखाई देती है. इस के प्रबंधन के लिए कारटेप 50 डब्ल्यूपी 500 ग्राम या कोरेजन 18.5 एससी 150 मिली. को 500 लिटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें या कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4 जी. 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 3-4 सैंटीमीटर स्थिर पानी में बिखेर दें.

धान के जीवाणु झुलसा रोग में पत्तियां नोक अथवा किनारे से एकदम सूखने लगती हैं. सूखे हुए किनारे अनियमित और टेढ़ेमेढ़े हो जाते हैं. इस की रोकथाम के लिए 15 ग्राम स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट 90 प्रतिशत+टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड 10 प्रतिशत और 500 ग्राम कौपर औक्सीक्लोराइड 50 डब्लूपी को 500 लिटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें. जब तक रोग ठीक न हो जाए तब तक यूरिया न डालें.

शीथ ब्लाइट रोग में पत्र कंचल (तना से सटा हुआ भाग) पर अनियमित आकार के धब्बे बनते हैं, जिस का किनारा गहरा भूरा और मध्य भाग हलके रंग का होता है. इस के प्रबंधन के लिए हेक्साकोनोजोल 5 प्रतिशत ईसी 1 लिटर या कार्बंडाजिम 50 प्रतिशत डब्लूपी 500 ग्राम को 500 लिटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें. कोरोना गाइडलाइन का पालन करें. 2 गज की दूरी रखें. छिड़काव से पहले साबुन से हाथ कम से कम 30 सैकंड जरूर धोएं, मास्क जरूर पहनें. बीड़ीसिगरेट, तंबाकू का प्रयोग नहीं करें. छिड़काव के बाद साबुन से स्नान करें और कीटनाशक के प्रयोग के बाद कम से कम 40-50 दिन तक दाने को खाने या फसल को पशुओं के चारे के रूप में प्रयोग न करें. ■

धान की फसल का कीटों से बचाव

* डा. प्रेम शंकर, डा. एसएन सिंह, डा. राकेश शर्मा, डा. वीना सचान

आप ने पिछले अंक में धान फसल में होने वाले रोगों के बारे में जाना कि किस तरह से उन से छुटकारा पाएं. उसी कड़ी में अब आगे पढ़ें कीटों के बारे में.

धान की फसल में अनेक रोगों के अलावा अनेक नुकसानदायक कीट भी होते हैं, जो फसल को बहुत अधिक नुकसान पहुंचाते हैं. उन कीटों से धान की फसल को कैसे बचाएं, पढ़ें विशेषज्ञों द्वारा बताई गई खास जानकारी :

प्रमुख कीट

तना बेधक

धान की फसल में इस कीट का प्रकोप अत्यधिक होता है. प्रमुख रूप से पीला तना बेधक आक्रमण करता है. इस कीट के प्रौढ़ लंबे, पीले या सफेद रंग होते हैं. कीट की सूंड़ियां पीले या मटमैले रंग की होती हैं, जो तने को छेद कर अंदर ही अंदर खाती रहती हैं. इस के प्रकोप से पौधे का मध्य तना सूख जाता है, जिसे 'मृत गोभ' कहते हैं.

बाद के आक्रमण से धान की बाली बिना दाने वाली निकलती हैं. बाली वाली अवस्था में प्रकोप होने पर बालियां सूख कर सफेद हो जाती हैं और दाने नहीं बनते हैं.

ऐसी बालियां ऊपर से खींचने पर आसानी से खिंच जाती हैं, जिसे 'सफेद बाली' कहते हैं. इस कीट का आर्थिक हानि स्तर 5-10 फीसदी मृत केंद्र या सफेद बाली प्रति वर्गमीटर आंकी गई है.

प्रबंधन

- पौध की 1.5-2.0 इंच ऊपरी पत्तियों को काट कर रोपाई करें, जिस से कीट द्वारा दिए गए अंडे नष्ट हो जाते हैं.
- फसल पर तना बेधक और पत्ती लपेटक कीट का प्रकोप होने पर ट्राइकोग्रामा जपोनिकम नामक परजीवी (ट्राइकोकार्ड) के 1.0-1.5 लाख अंडे प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करें.
- तना बेधक कीट के लिए प्रतिरोधक प्रजातियों जैसे: रत्ना, पंत धान-6, सुधा, वीएल-206 को उगाएं.
- 5 फीसदी नीम के तेल का छिड़काव करना चाहिए.
- खेत में 20 गंध पास प्रति हेक्टेयर की दर से लगा कर वयस्क कीटों को एकत्र कर नष्ट किया जा सकता है.
- 5 फीसदी सूखी बालियां दिखाई देने पर कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4 फीसदी दानेदार दवा 18 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में डाल कर पानी लगा दें या फिब्रोनिल 5 फीसदी एससी की 400-600 मिलीलिटर मात्रा को 500-600 लिटर पानी के साथ सरफेक्टेंट 500 मिलीलिटर घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें.

पत्ती लपेटक

इस का प्रकोप अगस्तसितंबर महीने में अधिक होता है. इस कीट के कारण खेत में मुड़ी हुई बेलनाकार पत्तियां दिखाई देने लगती हैं, जिन के अंदर सूंड़ी पत्ती के हरे भाग को खाती रहती हैं. प्रभावित खेत में धान की पत्तियां सफेद और झुलसी हुई दिखाई देती हैं.

कीट की इल्लियां (सूंड़ी) अंडों से निकलने के कुछ समय बाद इधरउधर विचरण कर अपनी लार द्वारा रेशमी धागा बना कर पत्ती के किनारों को मोड़ लेती हैं और वहां रहते हुए पत्ती को खुरचखुरच कर खाती रहती हैं. कीट

के पनपने के लिए तापमान 25-30 डिगरी सैल्सियस और हवा में नमी 83-90 फीसदी उपयुक्त दशा है.

प्रबंधन

☛ खेत में जगहजगह प्रकाश प्रपंच लगा कर वयस्क कीटों को एकत्र कर नष्ट कर दें.

☛ 2 ट्राइकोकार्ड्स प्रति हेक्टेयर की दर से 10-15 दिन के अंतराल पर 4-5 बार खेत में जगहजगह पर समान दूरी पर लगाएं.

☛ अधिक प्रकोप होने की दशा में एसीफेंट 50 एसपी की 700 ग्राम या फिप्रोनिल 5 एसपी की 600 मिलीलिटर या ट्राइजोफास 40 ईसी 400 मिलीलिटर प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए.

दीमक

दीमक लगभग सभी फसलों में नुकसान पहुंचाता है. दीमक के परिवार में राजा, रानी श्रमिक व सैनिक सहित चार सदस्य मौजूद रहते हैं. परिवार में रानी की संख्या केवल एक होती है, जो बच्चे देने का काम करती है.

दीमक का प्रकोप बलुई मिट्टी वाले और असिंचित क्षेत्रों में अधिक होता है. दीमक उन सभी चीजों को आमतौर नुकसान पहुंचाता है, जिन में सेल्यूलोज पाया जाता है. ये जड़ और तने को खा कर सुखा देते हैं. इस तरह के सूखे हुए पौधों को आसानी से उखाड़ा जा सकता है.

प्रबंधन

☛ गरमी में एक गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें, जिस से हानिकारक कवक, जीवाणु, कटुआ कीट की सूंड़ियां और सभी प्यूपे व अन्य कीटों की विभिन्न अवस्थाएं, जो जमीन के अंदर सुषुप्तावस्था में पड़ी रहती हैं, जमीन के ऊपर आने से तेज धूप की गरमी के कारण और चिड़ियों के द्वारा नष्ट कर दी जाती हैं.

☛ कच्चे गोबर को खेत में नहीं डालना चाहिए, क्योंकि इस से दीमक का प्रकोप अधिक बढ़ता है.

☛ सिंचाई की समुचित व्यवस्था रखनी चाहिए.

☛ दीमक के घरों को नष्ट कर रानी को मार देना चाहिए.

☛ ब्यूवेरिया बेसियाना की 2.5 किलोग्राम मात्रा को 30 किलोग्राम अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद में मिला कर खेत की तैयारी के समय प्रति हेक्टेयर की दर से जमीन में मिला दें.

☛ खड़ी फसल में अधिक प्रकोप होने पर क्लोरोपाइरीफास 20 ईसी 2-3 लिटर प्रति हेक्टेयर की दर से 10-20 किलोग्राम बालू में मिला कर उचित नमी पर सायंकाल में बुरकाव करें.

धान के फुदके

धान में अकसर 2 तरह के फुदके ज्यादा आक्रमण करते हैं. पहला उजली पीठ वाला फुदका (डब्ल्यूबीपीएच) और दूसरा भूरा फुदका (बीपीएच). भूरे फुदके के प्रौढ़ भूरे रंग के होते हैं, जिन की लंबाई तकरीबन 3.5-4.5 मिलीमीटर तक होती है.

इस कीट के नन्हे फुदके और प्रौढ़ दोनों ही पौधों की कोशिकाओं का रस चूसते हैं, जिस से पौधा पीला पड़ जाता है. इस के अधिक आक्रमण की दशा में फुदका झुलसा या हार्पर बर्न जैसे लक्षण दिखाई देते हैं.

शुरुआत में ये फसल के किसी एक स्थान से शुरू हो कर पूरे खेत में फैल जाते हैं. इस के अलावा ये कीटग्रासी स्टंट नाम के विषाणु रोग को फैलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.

प्रबंधन

☛ लीफ हापर और प्लांट हापर के नियंत्रण में लाइकोसा प्रजाति की मकड़ी अधिक कारगर होती है. इसलिए खेत में मकड़ी की संख्या बढ़ाने के लिए मेंड़ पर जगहजगह धान की पुआल के गट्ठर डाल देने चाहिए. इस तकनीक का उत्तर प्रदेश और हरियाणा के कुछ गांवों में सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया गया, जिस से कीट व रोगनाशी रसायनों के प्रयोग व लागत में कमी आई और उपज में वृद्धि हुई.

☛ कीट का प्रकोप होने की दशा में यूरिया का खड़ी फसल में छिड़काव बंद कर दें.

☛ फसल में मित्र कीटों और मकड़ियों का संरक्षण करना चाहिए.

☛ कीटों का अधिक प्रकोप होने पर थायोमेथोक्जाम 300 ग्राम या इमिडाक्लोप्रिड 300 मिलीलिटर दवा का प्रति हेक्टेयर की दर से 600-800 लिटर पानी में घोल कर छिड़काव करें.

धान का हिस्पा

यह काले रंग का कीट होता है. इस के शरीर पर छोटेछोटे कांटेनुमा रोएं होते हैं. इस की लंबाई 5 मिलीमीटर तक होती है. इस के गिडार और वयस्क दोनों ही पत्तियों को खुरच कर उस के हरे भाग को खाते हैं, जिस से पत्तियां सूख जाती हैं.

प्रबंधन

☛ रोपाई के पहले पौध के शिरों को थोड़ा काट दें. उस के बाद रोपाई करें.

☛ झुंड में 1-2 कीट प्रति झुंड दिखाई देने पर फिप्रोनिल 2 मिलीलिटर प्रति लिटर पानी की दर से या मिथोमाइल 2.0 ग्राम प्रति लिटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करना चाहिए.

गंधी बग

इस का वयस्क लगभग 15 मिमी. लंबा और हरेभूरे से गहरे भूरे रंग का होता है. इस कीट की पहचान इस से आने वाली दुर्गंध द्वारा आसानी से की जा सकती है.

इस कीट के नवजात और प्रौढ़ दोनों ही दुग्धावस्था में बालियों से दूध को चूसते रहते हैं, जिस से बालियों में दाने नहीं बन पाते हैं. रस चूसने वाले बिंदु पर दानों में भूरा दाग बन जाता है और दाने खोखले रह जाते हैं.

इस के नियंत्रण के लिए खेतों के किनारों से खरपतवारों को निकालते रहना चाहिए, क्योंकि ये कीट इन पर पलते हैं और दूधिया दाने बनने की अवस्था में ही फसल पर आक्रमण करते हैं.

प्रबंधन

☛ खेत की मेंड़ों पर उगी हुई घासों की सफाई करें.

☛ 5 फीसदी नीम के सत का खड़ी फसल में छिड़काव करना चाहिए.

☛ कीट का प्रकोप 1 बग/झुंड से अधिक होने पर इमिडाक्लोप्रिड 300 मिलीलिटर मात्रा को 600-800 लिटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें. ■

सितंबर महीने में खेती से जुड़े जरूरी काम

✻ बृहस्पति कुमार पांडेय

हमारे यहां खेतीबारी के नजरिए से सितंबर का महीना यानी हिंदी का भादों महीना काफी खास होता है. इस महीने में धान की फसल में कीट और बीमारियों के नियंत्रण पर खासा ध्यान देना दिया जाता है, क्योंकि धान की अगेती किस्में पकने की अवस्था में पहुंचने लगती हैं. इस के अलावा ज्वार, बाजरा जैसी फसलें भी पक रही होती हैं.

खरीफ सीजन में बोई गई दलहनी फसलों जैसे मूंग, उड़द, लोबिया की फसल का इस महीने में पकने का समय होता है. यही वह समय होता है, जब तोरिया, अगेती सरसों और लाही की बोआई की जाती है.

रबी सीजन के लिए ली जाने वाली सब्जियों की फसल के लिए इस महीने नर्सरी तैयार करने का भी समय होता है. साथ ही, कई तरह की सब्जियों की सीधी बोआई खेत में की जाती है. इस के अलावा यह बागबानी, पशुपालन, खुंब उत्पादन, चारा फसलों के लिए भी काफी खास होता है.

धान की फसल में पूरे सितंबर महीने में किस्मों के हिसाब से बालियां आती हैं. ऐसी दशा में फसल की खास देखभाल की जरूरत होती है. धान की फसल में 50 से 55 दिन की अवस्था में नाइट्रोजन यानी यूरिया की दूसरी व अंतिम टौप ड्रैसिंग बाली बनने की अवस्था में की जाती है.

धान की सुगंधित प्रजातियों में नाइट्रोजन की 15 किलोग्राम मात्रा व अन्य प्रजातियों में 30 किलोग्राम की मात्रा का टौप ड्रैसिंग करनी चाहिए.

इस समय यह ध्यान दें कि खेत में 2 से 3 सैंटीमीटर पानी से अधिक न हो और बालियां निकलने व फूल आते समय पर्याप्त नमी हो.

इस दौरान धान की फसल में जीवाणु झुलसा, भूरी चित्ती, फाल्स स्मट जैसे रोगों का प्रकोप दिखाई पड़ता है. साथ ही, फसल में तना छेदक, धान का पत्ती लपेटक, धान का भूरा फुदका का प्रकोप भी दिखाई पड़ता है. ऐसी दशा में अपने नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक फसल सुरक्षा से संपर्क कर उन के द्वारा बताए गए उपाय जरूर करें.

जिन किसानों ने मक्का या ज्वार की खेती कर रखी है, अगर उन के क्षेत्र में बारिश अधिक हो रही है, तो उचित जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित करें. मक्का और ज्वार में दाने बनने की अवस्था में उपयुक्त नमी बनाए रखने के लिए सिंचाई अवश्य करें.

बाजरा की फसल में बोआई के 25 से 30 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 87 से 108 किलोग्राम यूरिया की टौप ड्रैसिंग करें. बाजरा की फसल में अगर कीट का दुष्प्रभाव दिखाई पड़े या दाने की जगह भूरेकाले रंग की सींक आकार की गांठें बन रही हों, जिन्हें सफेद स्क्लेरेशिया कहते हैं या पत्तियों का रंग पीला पड़ रहा हो, तो अपने नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्र पर संपर्क करें.

मूंग, उड़द, सोयाबीन, फूल और फली बनते समय नमी बनाए रखने के लिए सिंचाई अवश्य करें.

मूंगफली की फसल में अगर फलियां बननी शुरू हो चुकी हों, तो नमी बनाए रखने के लिए सिंचाई करें. अगर बारिश अधिक हो रही हो, तो मूंगफली की फसल से पानी निकालते रहें.

इस महीने में सूरजमुखी की फसल में फूल आते समय या दाने बनते समय खेत में पर्याप्त नमी सुनिश्चित करें. इस फसल को चिड़िया बहुत अधिक नुकसान पहुंचाती हैं. इस से बचने के लिए एकसाथ कई किसान सूरजमुखी की फसल लेते हैं, तो चिड़िया नुकसान कम पहुंचाती हैं. अगर कम रकबे में सूरजमुखी की फसल ली गई है, तो दानों को चिड़ियों से बचाने के लिए फसल से एक मीटर ऊपर चमकीली पन्नी बांधें.

गन्ने की फसल को नुकसान से बचाने के लिए हर हाल में इस महीने में बंधाई का काम पूरा कर लें. फसल को बांधते समय यह ध्यान रखें कि कतार के अंदर गन्ने को डेढ़ मीटर की ऊंचाई पर बांधें.

फसल को और अधिक सुरक्षित बनाने के लिए कतार से कतार के गन्ने को बांधें. इस समय यह ध्यान रखें कि गन्ने की पत्तियां न टूटें.

अगर गन्ने में पायरिला कीट का प्रकोप दिखाई पड़ता है, तो इस की रोकथाम के लिए फास्फेमिडान 400 मिली या मिथाइल डिमेटान 1.5 लिटर को 1,000 लिटर पानी में घोल कर छिड़काव करें.

गन्ने की फसल में गुरुदासपुर बोरर व शीर्ष बेधक यानी टौप बोरर कीट का प्रकोप दिखाई पड़ने पर क्लोरोपाइरीफास 20 प्रतिशत ईसी की डेढ़ लिटर मात्रा को 800 से 1,000 लिटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए.

शरदकालीन गन्ने की बोआई करने के लिए सितंबर महीने के दूसरे पखवारे से अक्तूबर के दूसरे पखवारे का समय सब से उचित होता है. जो किसान शरदकालीन गन्ने की बोआई करना चाहते हैं, वे 50 से 60 क्विंटल बीज की मात्रा की बोआई प्रति हेक्टेयर की दर से कर सकते हैं.

तोरिया और लाही की बोआई के लिए सितंबर महीने का पहला सप्ताह सब से उपयुक्त होता है, क्योंकि सितंबर के पहले सप्ताह में तोरिया की बोआई करने से फसल नवंबर महीने में पक जाती है. ऐसे में तोरिया की फसल के नवंबर महीने में कट जाने से खेत गेहूं की

बोआई के लिए खाली हो जाता है.

सितंबर महीने में बोई जाने वाली तोरिया की उन्नत किस्मों में टाइप-9, भवानी, टाइप-1, पीटी- 303, जवाहर तोरिया-1, पंत तोरिया-303, राज विजय तोरिया-3, बस्तर तोरिया- 1, संगम टीएल- 15 वगैरह उचित होती हैं, जबकि सरसों की बोआई के लिए सितंबर महीने का दूसरा पखवारा उचित होता है. इस की उन्नत किस्मों में पूसा तारक, पूसा सरसों- 25, पूसा सरसों- 27, पूसा सरसों- 28, पूसा महक व पूसा अग्रणी प्रमुख मानी जाती हैं.

सब्जी की खेती करने वाले किसान सितंबर महीने में टमाटर की संकर प्रजातियों और गोभी की उन्नत किस्मों की नर्सरी डालें. जिन किसानों ने पत्तागोभी की उन्नत किस्मों की नर्सरी डाल रखी है, वे पौधों की रोपाई 15 सितंबर तक कर सकते हैं, जबकि पछेती किस्मों की रोपाई 15 सितंबर के बाद भी की जा सकती है.

जिन किसानों ने शिमला मिर्च की नर्सरी डाल रखी है, वे पौधों के 30 दिन के हो जाने पर खेत में रोपाई का काम पूरा कर लें.

फूलगोभी की इंप्रूव्ड जापानी, पूसा दीपाली, पूसा कार्तिकी की रोपाई के लिए पूरा सितंबर महीना उपयुक्त होता है. मूली की एशियाई किस्मों जैसे जापानी ह्वाइट, पूसा चेतकी, मूली नंबर-1, कल्यानपुर-1 की बोआई इस महीने करें. इस के लिए प्रति हेक्टेयर 6 से 8 किलोग्राम बीज की जरूरत पड़ती है.

सितंबर महीने में मेथी की अगेती किस्मों की बोआई की जा सकती है. इस के लिए प्रति हेक्टेयर 25 से 30 किलोग्राम बीज की जरूरत पड़ती है. अगर इस महीने बारिश खत्म हो चुकी हो, तो धनिया की पंत हरीतिमा, आजाद धनिया-1 वगैरह बोई जा सकती है.

आलू उत्पादक किसान उन्नत किस्मों जैसे कुफरी अशोका, कुफरी चंद्रमुखी की बोआई 25 सितंबर के बाद से शुरू कर सकते हैं, वहीं पालक की बोआई के लिए किसान उन्नत किस्मों जैसे आलग्रीन, पूसा ज्योति, पूसा हरित, पालक नंबर 51-16, वर्जिनिया सेवोय, अर्ली स्मूथ लीफ का चुनाव कर सकते हैं.

मटर की अगेती प्रजातियों की बोआई इस महीने के दूसरे सप्ताह से अक्तूबर महीने के दूसरे सप्ताह तक कर सकते हैं. इस की उन्नत प्रजातियों में आजाद मटर-3, काशी नंदिनी, काशी मुक्ति, काशी उदय, काशी अगेती प्रमुख हैं.

सितंबर का महीना फूलों की रोपाई और बोआई के लिहाज से सब से मुफीद माना जाता है. इस महीने गेंदा, कैलनडुला, विगोनिया, गुलदाउदी, डहेलिया, स्वीट पी, सूरजमुखी, जिनिया, डोगफ्लावर, कार्नेशन, पोपी, लारकसपुर की रोपाई के लिए क्यारियों को अच्छी तरह से तैयार कर लें. इस महीने रजनीगंधा की कटाई कर के बाजार में समय से भेजते रहें.

अगर किसान ने लीची के नए बाग लगाए हैं और एक साल के पौधे हो गए हैं, तो प्रति पौधा 5 किलोग्राम गोबर की या कंपोस्ट खाद, 50 ग्राम नाइट्रोजन, 25 ग्राम फास्फेट व 50 ग्राम पोटाश की मात्रा दें. इसी तरह 10 साल से ऊपर के पौधों के लिए 50 किलोग्राम गोबर या कंपोस्ट खाद, 500 ग्राम नाइट्रोजन, 250 ग्राम फास्फेट और 500 ग्राम पोटाश की मात्रा दें. अगर पौधों में जिंक की कमी दिखाई पड़ती है, तो जिंक सल्फेट का भी प्रयोग करें.

जिन किसानों ने नर्सरी में पपीते के पौध तैयार किए हैं, उन की रोपाई इस महीने कर देनी चाहिए. इस के अलावा जिन किसानों ने केले के पौधों की रोपाई अभी तक नहीं की है, वे इस महीने रोपाई का काम पूरा कर लें.

अमरूद के बागों में अगर तना भेदक कीटों का प्रकोप दिखाई पड़े, तो छेद को साफ कर के उस में पैट्रोल से भीगी हुई रूई भर दें. छेदों को चिकनी मिट्टी से भी बंद किया जा सकता है, ताकि कीट मर जाएं.

अगर अंगूर की फसल में एंथ्रेक्नोज रोग का प्रकोप दिखाई पड़े, तो बाविस्टिन 0.2 प्रतिशत के घोल का छिड़काव करें, वहीं चीकू के पौधों को दीमक से बचाने के लिए क्लोरोपाइरीफास 2 मिलीमीटर प्रति लिटर पानी में मिला कर पौधों पर छिड़काव करें.

जो किसान आंवले के बाग अगस्त महीने के अंत तक न लगा पाए हों, वे सितंबर महीने के शुरुआती सप्ताह में पौधों की रोपाई का काम पूरा कर लें.

आम के पौध की कटाईछंटाई का काम सितंबर महीने में पूरा करें और पेड़ों में जिंक की कमी दिखाई पड़ने पर जिंक की मात्रा अपने नजदीकी उद्यान विशेषज्ञ से संपर्क कर के दें, वहीं कटहल के फलों की तुड़ाई का काम पूरा कर फलों को समय से मंडी में पहुंचाएं.

जो किसान कटहल के पौध तैयार करना चाहते हैं, वह इसी महीने फलों से बीज निकाल कर पौधशाला में पौध तैयार करने के लिए डाल दें. अगर पौधों में मिलीबग कीट का प्रकोप दिखाई पड़े, तो पेड़ पर पौलीथिन लगाएं.

लोकाट के नए बाग लगाने का काम सितंबर महीने के अंत तक जरूर पूरा कर लें. इस समय पुराने बागों के पौधे में फूल आने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है. इस दशा में किसी भी कीटनाशकों प्रयोग न करें.

अगर नीबू या नीबूवर्गीय पौधे में कैंकर रोग का प्रकोप दिखाई पड़े, तो स्ट्रेप्टोसाइक्लिन की 250 मात्रा को 100 लिटर पानी में घोल कर साथ ही नीम की खली 5 किलोग्राम मात्रा को 100 लिटर पानी में घोल कर छिड़काव करें.

जो किसान स्ट्राबेरी की खेती करते हैं, वे सितंबर महीने से खेतों की तैयारी शुरू कर दें, जिस से अक्तूबर महीने के अंत तक पौधे की रोपाई के लिए खेत पूरी तरह से तैयार रहें.

पशुपालक सितंबर महीने में बरसीम की बोआई कर दें, जिस से नवंबर महीने से मई महीने तक तकरीबन 6 कटाई में 300 से 350 क्विंटल चारा मिलता है.

पशुपालक अपने पशुओं का टीका समय पर लगवाने की व्यवस्था करें. पशुओं को मुख्य रूप से जो टीका लगाया जाता है, उस में एचएस और बीक्यू का टीका, खुरपकामुंहपका की रोकथाम का टीका प्रमुख है. इस के अलावा नवजात बछड़ों को खीस जरूर दें. दूध निकालते समय साफसफाई का खास खयाल रखें.

मुरगीपालक मुरगियों को कैल्शियम की आपूर्ति के लिए सीप का चूरा जरूर दें. साथ ही, पेट के कीड़ों को मारने की दवा दें. मुरगीखाने में 14 से 16 घंटे प्रकाश की व्यवस्था जरूर करें. ■

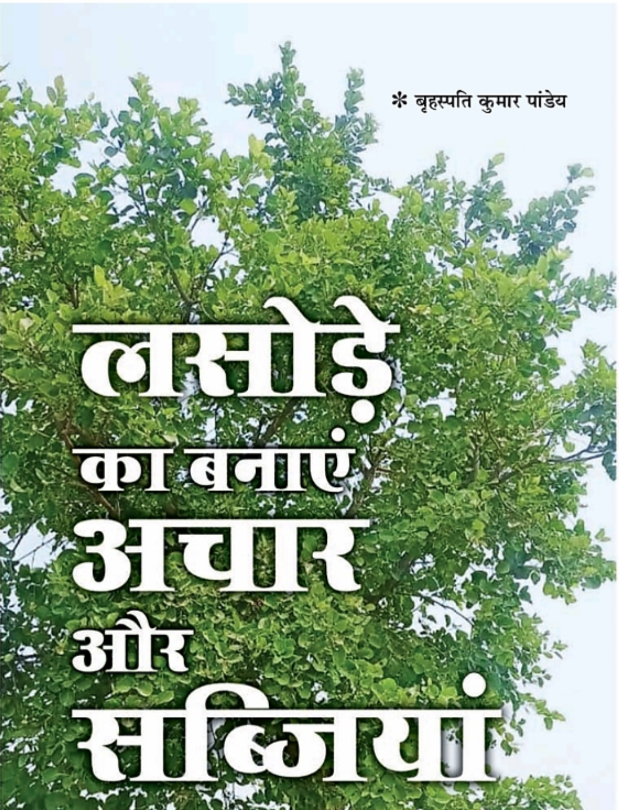

* बृहस्पति कुमार पांडेय

लसोड़े का बनाएं अचार और सब्जियां

हमारे आसपास कई ऐसे पेड़पौधे होते हैं, जिन्हें हम बेकार समझ कर ध्यान नहीं देते हैं, जबकि इस में से कुछ ऐसे होते हैं, जो सेहत का खजाना होते हैं. इन में से बहुत से ऐसे पौधे होते हैं, जिन के पत्ते, फलफूल, तना व छाल का उपयोग खाने के साथ ही औषधियों के रूप में भी किया जाता है. ऐसा ही एक खास पौधा है लसोड़ा, जिसे कैरी गुंदा, गोंदी, निशा, रेठू या टेंटी के नाम से भी जाना जाता है.

लसोड़े का पौधा हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, राजस्थान सहित पूरे भारत में पाया जाता है. यह पोषक तत्त्वों और औषधीय गुणों से भरपूर होता है. इस के फल सुपारी के समान होते हैं.

लसोड़े के कच्चे फलों की बहुत ही स्वादिष्ठ सब्जी और अचार बनाया जाता है. इस के पके हुए फल मीठे होते हैं और इस के अंदर चिकना और मीठा गोंद होता है.

लसोड़े के फल में मौजूद प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, फाइबर, आयरन, फास्फोरस व कैल्शियम की प्रचुर मात्रा पाई जाती है. बहुत सी जगहों पर लसोड़े के फलों को सुखा कर चूर्ण बनाया जाता है, जिसे मैदा, बेसन और घी के साथ मिला कर लड्डू बनाए जाते हैं.

इसे मांस से भी 10 गुना ज्यादा ताकतवर माना जाता है. इस का सेवन शरीर के लिए बहुत ही उत्तम और ताकत से भरपूर होता है.

लसोड़े में भरपूर मात्रा में कैल्शियम और फास्फोरस होता है, जो हड्डियों को मजबूत बनाता है और शरीर को ताकत देता है. इस फल को खाने से शरीर में ताकत आती है और शरीर को कई अन्य बीमारियों से राहत मिलती है. इस फल का उपयोग मस्तिष्क को भी तेज करता है.

लसोड़ा खाने से शरीर में खून की कमी दूर होती है. इस की फल और पत्तियां महिलाओं में होने वाले कई रोगों के निदान में कारगर होती हैं.

इस सेहतमंद पौधे के कच्चे फल का बेहद लजीज अचार और सब्जियां बनाई जाती हैं. लसोड़े का स्वादिष्ठ अचार और जायकेदार सब्जी बनाने की विधि इस प्रकार है :

लसोड़े का अचार बनाने के लिए जरूरी चीजें

अचार बनाने के लिए लसोड़े के साबुत कच्चे फलों का चयन करें. आधा किलोग्राम लसोड़े के फलों का अचार बनाने के लिए जिन चीजों की जरूरत होती है, उस के लिए सब से पहले 1 छोटा चम्मच हलदी पाउडर, दरदरी पिसी 3 चम्मच राई या पीली सरसों, नमक स्वाद के मुताबिक, आधा कप सरसों का तेल, 2 छोटी चम्मच सौंफ, 1 छोटी चम्मच लाल मिर्च पाउडर, एकचौथाई चम्मच हींग, आधा चम्मच जीरा, आधा चम्मच अजवायन, एक से 2 कच्चे आम और एक चम्मच मेथी दाना की जरूरत पड़ती है.

अचार बनाने की विधि

लसोड़े का अचार बनाने के लिए सब से पहले उस के डंठल को तोड़ कर फलों से अलग कर लिया जाता है. इस के बाद फलों को साफ पानी से अच्छी तरह धो लेते हैं, फिर लसोड़े के फलों को उबालने के लिए ऐसे बरतन का चयन करते हैं, जिस में रखने के बाद लसोड़े पानी में अच्छी तरह डूब जाएं.

जब पानी में उबाल आने लगे, तभी उस पानी में लसोड़े डालते हैं. जब 3-4 मिनट तक लसोड़े उबल जाएं, तो उसे गैस से उतार कर ठंडा होने के लिए रख देते हैं. जब लसोड़े ठंडे हो जाएं, तो उसे पानी से निकाल कर अलग कर लेते हैं, जिस से उस का सारा पानी निकल जाए.

चूंकि लसोड़े के गूदे में चिपचिपा तरल गोंद भरा होता है. इसलिए सब से पहले इस के चिपचिपेपन को खत्म करने के लिए पानी में डाल कर कांजी बनाई जाती है.

यह कांजी एक तरह का पेय पदार्थ होता है, जो बेहद ही चटपटा और स्वादिष्ठ होता है. लसोड़े की कांजी बनाने के लिए सब से पहले एक लिटर पानी लेते हैं, जिसे उबाल कर ठंडा कर लेना चाहिए.

इस के बाद इस उबाले गए पानी को कांच या प्लास्टिक के जार में डाल कर उस में उबाले गए लसोड़ों को डाल दिया जाता है.

इस के बाद इस में एक छोटी चम्मच हलदी पाउडर, नमक स्वादानुसार और लाल मिर्च पाउडर भी स्वादानुसार, पीली सरसों का पाउडर और सरसों का तेल मिलाया जाता है. लसोड़ों को इस घोल में मिला कर जार का ढक्कन बंद कर 3 से 4 दिन के लिए रख देते हैं, जिस से खट्टी कांजी बन कर तैयार हो जाती है.

लसोड़े की कांजी बनाने से उन के अंदर की गुठली का चिपचिपापन खत्म हो जाता है. लसोड़े से तैयार कांजी को हम पी भी सकते हैं या फिर चपाती, परांठे के साथ खा सकते हैं.

कांजी से अलग किए गए लसोड़े अब पूरी तरह से अचार बनाने के लिए तैयार होते हैं. इस के लिए सब से पहले इस को बीच से काट कर उस की गुठलियों को अलग कर लेते हैं.

अब इन लसोड़ों को सूखे कांच के जार में रख कर सरसों का तेल गरम करने के बाद उसे ठंडा कर लसोड़े में डाल देते हैं. तेल की मात्रा इतनी रखी जाती है, जितने में लसोड़े डूब जाएं.

इस के बाद इस में एक से दो कच्चे आम के गूदे को छील कर उस के गूदे को पीस लेते हैं और उस में दरदरे पीसे गए 2 चम्मच नमक, एक छोटी चम्मच हलदी पाउडर, 2 चम्मच मैथी दाना, 2 चम्मच पीली सरसों, 2 छोटी चम्मच अजवायन, 1 छोटी चम्मच लाल मिर्च और एकचौथाई छोटी चम्मच हींग को आम के पेस्ट के साथ मिला कर लसोड़े में मिला देते हैं. इस के बाद मसाले वाले साबुत लसोड़े के अचार को कुछ दिन धूप में रख देते हैं.

लसोड़े का यह तैयार अचार, जहां खाने में बेहद लजीज होता है, वहीं यह सेहत के लिए भी काफी फायदेमंद माना जाता है.

अचार को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए जरूरी है कि अचार बनाते समय जो भी बरतन इस्तेमाल करें, वे सब सूखे और साफ हों.

अचार में किसी तरह की नमी और गंदगी नहीं जानी चाहिए. साथ ही, जब भी अचार को जार से निकालें, तो साफ और सूखे चम्मच का ही इस्तेमाल करें. इस के अलावा लसोड़े के अचार को 3 महीने में 1 दिन के लिए धूप दिखाना न भूलें.

लसोड़े की लजीज सब्जी

250 ग्राम लसोड़े की सब्जी बनाने के लिए जिन चीजों की जरूरत पड़ती है, उस में तेल 4 चम्मच, जीरा 1 चम्मच, अजवाइन आधा चम्मच, तेजपत्ता 2 पीस, आवश्यकतानुसार नमक, हलदी पाउडर आधा चम्मच, लाल मिर्च पाउडर 1 चम्मच, धनिया पाउडर 1 चम्मच, जीरा पाउडर 1 चम्मच, सौंफ पाउडर 1 चम्मच, हींग एक चुटकी और आधा चम्मच अमचूर पाउडर की जरूरत पड़ती है.

बनाने की विधि

सब से पहले लसोड़े के फलों के ऊपर की कैप को हटा लेते हैं. इस के बाद लसोड़े के फल को किसी बरतन में 2-3 कप पानी डाल कर उबाल लीजिए.

लसोड़े जल्दी उबलें, इस के लिए बरतन को ढक दीजिए. कोशिश करें कि लसोड़ों को नरम होने तक या 10 मिनट ढक कर उबालें. इस के बाद उबाले गए लसोड़ों को ठंडा होने के बाद काट कर उस की गुठलियों को अलग कर लेते हैं.

इस के बाद पैन या कड़ाही में जब तेल गरम हो जाए, तो इस में जीरा, अजवाइन, तेजपत्ता डाल कर हलका लाल कर लें. गैस धीमी कर लें, फिर लाल मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर, जीरा पाउडर, सौंफ पाउडर, अमचूर पाउडर, हलदी पाउडर डाल कर लसोड़े डाल दें.

सारी चीजों को अच्छी तरह मिक्स कर के धीमी आंच पर भूनें. उस के बाद स्वादानुसार नमक डालें. 5 मिनट धीमी आंच पर पकने दें.

लीजिए 5 मिनट बाद बन कर तैयार है स्वादिष्ठ मसालेदार लसोड़े की सब्जी. इसे भोजन की थाली में साइड डिश की तरह परोसा जा सकता है.

इस सब्जी को किसी भी पिकनिक या यात्रा पर पूरी या परांठे के साथ ले जा कर खाने का भरपूर मजा ले सकते हैं. ■

बरसात में न कटने दें खेत की मिट्टी

* भारत भूषण श्रीवास्तव

बारिश न हो या कम हो तो सभी किसान परेशान रहते हैं, लेकिन समझदार किसान लगातार तेज बारिश से भी घबराते हैं, क्योंकि इस से मिट्टी का कटाव होता है, जो खेत का आकार तो बिगाड़ता ही है, साथ ही जरूरी पोषक तत्त्वों को भी साथ बहा ले जाता है.

फलां जगह की मिट्टी दमदार है या फलां जगह की मिट्टी कमजोर है, यह कहने के पीछे वजह मिट्टी में पोषक तत्त्वों की मौजूदगी रहती है, जिस पर तेज बारिश का खासा असर पड़ता है. उपजाऊ मिट्टियों में पोषक तत्त्व इफरात से पाए जाते हैं, पर इन की खूबी यह होती है कि ये मिट्टी की ऊपरी सतह पर ही रहते हैं. तेज बारिश का पानी इन्हें बहा ले जाता है, तो इस का बुरा असर मिट्टी की क्वालिटी और सेहत पर भी पड़ता है.

बारिश में मिट्टी का कटाव होना तय रहता है, पर यह ज्यादा हो तो खेत का हुलिया तो बिगड़ता ही है, साथ ही पैदावार पर भी बुरा असर पड़ता है.

बारिश के पानी से मिट्टी के कटाव को पूरी तरह से तो नहीं रोका जा सकता, लेकिन कुछ उपाय किए जाएं तो इतना कम जरूर किया जा सकता है कि नुकसान न के बराबर हो.

खेतीकिसानी के माहिरों का जोर हमेशा से ही मिट्टी संरक्षण पर रहा है कि कैसे मिट्टी का कटना कम किया जाए और ऐसे तरीके ईजाद किए जाएं, जिन्हें किसान अपने तौर पर अपना सकें.

इस साल भी मानसून कमजोर है और इसे कमजोर मानसून की खूबी कह लें या खामी, पर इस में कुछ दिनों के लिए लगातार और तेज बारिश होती है, जिस का दूरगामी असर मिट्टी की पैदावार कूवत और खेती की बनावट पर पड़ता है. बहुत ज्यादा तेज बारिश हो तो खेत के खेत गायब हो जाते हैं यानी मिट्टी बह जाती है और गड्ढे, नालियां और बीहड़ बन जाते हैं. इस से जमीन ऊबड़खाबड़ हो कर बेकार हो जाती है.

यहां कुछ ऐसे उपाय बताए जा रहे हैं, जिन्हें अपना कर किसान मिट्टी का कटाव रोक सकते हैं.

कंटूर खेती

पहाड़ी इलाकों में जहां बारिश ज्यादा होती है, वहां कंटूर खेती पर जोर दिया जाता है. इस में ढलान के विपरीत यानी नीचे से ऊपर की तरफ कृषि क्रियाएं की जाती हैं. इस में सब से अहम है जुताई. ढलान के ऊपर की तरफ जुताई करते रहने से ढलान कम होती है, जिस से मिट्टी का कटाव कम होता है और उस के पोषक व उपजाऊ तत्त्व ज्यादा तादाद में नहीं बह पाते. अगर फसलों की खेती न की जानी हो, तो ढलान पर मोटे तने वाले पेड़ या ऐसी घासें लगानी चाहिए, जिन की जड़ें मिट्टी में ज्यादा फैलती हों और मजबूती से मिट्टी से चिपकी रहती हों. इस से मिट्टी का बहाव और कटाव कम होता है. बीचबीच में एक तयशुदा दूरी पर ब्रेकर भी मेंड़ की शक्ल में बनाए जा सकते हैं, जिस से मिट्टी एकदम नीचे न जाने पाए.

फैलने वाली फसलें

बारिश में मिट्टी का कटाव रोकने का कारगर व सरल तरीका यह है कि ऐसी फसलों

की खेती की जाए, जो ज्यादा जगह घेरती हों यानी फैलती ज्यादा हों. मसलन, लोबिया और मूंग. इन की जड़ें, तने व पत्तियां मिट्टी का कटाव कम करते हैं. सीधेसीधे कहें, तो मिट्टी और उस के कणों को ज्यादा बहने नहीं देते.

एक सर्वे की रिपोर्ट में यह बात मानी भी गई है कि अगर ये फसलें बोई जाएं, तो मिट्टी का कटाव 1 हेक्टेयर रकबे से 26 टन के लगभग होता है, जबकि खेत खाली छोड़ दिया जाए, तो यही कटाव 42 टन प्रति हेक्टेयर एक साल में होता है. जाहिर है, किसी भी सूरत में खरीफ की फसल में खेत खाली छोड़ना नुकसानदेह साबित होता है.

माहिरों का मशवरा यह भी है कि ज्यादा जगह घेरने वाली फसलों के साथ क्यारियों में कम जगह घेरने वाली फसलें भी लगाई जाएं, जैसे मूंगफली, उड़द और सोयाबीन के साथ मक्का और अरंडी को लगाया जाए, तो मिट्टी का कटाव कम होता है.

पट्टीदार खेती

इस तरीके में ऐसी फसलें जो घनी होती हैं, बोई जाती हैं. ये मिट्टी का कटाव रोकती हैं. लेकिन ऐसी फसलें जो दूरदूर बोई जाती हैं और मिट्टी का कटाव नहीं रोकतीं, उन्हें संकरी पट्टियों में बोया जाता है.

ये पट्टियां ढाल के आरपार बनाई जाती हैं. इस पट्टीदार खेती की खासीयत यह है कि घनी बोई जाने वाली फसलें मिट्टी का कटाव रोकती हैं, मसलन मूंगफली और मोठ को ज्वार या मक्का के साथ पट्टियां बना कर लगाया जाता है.

घास लगाना

घास हालांकि खरपतवार है, लेकिन मिट्टी का कटाव रोकने के गुण इस में मौजूद हैं. वजह इस की जड़ें और तना हैं, जो खूब फैलती है. मिट्टी के कणों को घास बांध कर रखती है. मिट्टी का कटाव रोकने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली कुछ खास घासें हैं, जैसे अंजन घास, दूब घास, कुशल घास, मूंज घास और ब्लू पेनिक घास.

हालांकि बारिश के पानी से मिट्टी का कटाव रोकने के और भी तरीके हैं, लेकिन वे कारगर इसलिए नहीं हो पाते क्योंकि वे महंगे पड़ते हैं और छोटी जोत वाले किसान उन्हें आसानी से अपना नहीं सकते. जैसे जगहजगह मेंड़ें बनाना, नाली और गली बनाना वगैरह, लेकिन वृक्ष रोपण आसान काम है, इस से भी मिट्टी का कटाव कम किया जा सकता है. ऐसे इलाकों में जहां फसलें न ली जाती हों, पेड़ लगा कर इस परेशानी को काबू किया जा सकता है. यूकेलिप्टस का पेड़ इस के लिए मुफीद साबित होता है.

रसायनों का इस्तेमाल

कुछ रसायन ऐसे भी हैं, जिन के छिड़काव से मिट्टी का कटाव कम किया जा सकता है. पौली विनाइल एल्कोहल नाम के रसायन को अगर 500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़का जाए, तो मिट्टी के कण आपस में मजबूती से बंध जाते हैं और उस की परत आसानी से टूटती नहीं है. इसी तरह विटूमिन नाम के रसायन के इस्तेमाल से भी मिट्टी के कण आपस में मजबूती से बंध जाते हैं. वैसे ये रसायन महंगे पड़ते हैं, लेकिन गोबर की खाद, हरी खाद और फसलों के अवशेषों से भी मिट्टी का कटाव कम किया जा सकता है. इन्हें पूरे खेत में फैला देना चाहिए.

आमतौर पर भारत के किसान इस तरह के तरीके आजमाने से कतराते हैं. इस से लगातार मिट्टियों का कटाव बढ़ रहा है और उन की क्वालिटी भी गिर रही है.

हर जगह खेतों में मिट्टी का कटाव होता देखा जा सकता है, जो अकसर ढाल के आसपास से शुरू होता है और वक्त रहते न रोका जाए तो साल दर साल बढ़ कर पूरे खेत को बहा डालता है. इसलिए किसानों को बारिश में मिट्टी के कटाव को ले कर सावधानी बरतनी चाहिए. एक रिपोर्ट के मुताबिक, हमारे देश में हर साल 5,337 मिलियन टन यानी प्रति हेक्टेयर 16.35 टन मिट्टी इधर से उधर हो जाती है, जो कतई अच्छी बात नहीं है. ■

दिल्ली प्रैस

धार्मिक त्यौहार औरतों पर दोहरा तिहरा बोझ हैं. कामकाजी औरतों को दफ्तर, पूजापाठ, तरहतरह के व्यंजन, सजनाधजना सब करना होता है तभी पूरे परिवार का त्यौहार बनता है.

क्या ऐसे त्यौहार औरतों के लिए सजा नहीं हैं जिन में पति व पुरुष हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें. यह सवाल उठाया जाना चाहिए या नहीं या इसे जीवन पद्धति समझ कर हर कोई ढोता रहे.

हर तरह की विषम परिस्थितियों, टेढ़े सवालों, कठिन फैसलों के लिए दिल्ली प्रैस की पत्रिकाएं अपनी अनूठी रचनाओं से तैयार करती हैं ताकि आप सुखी, संपन्न व बराबरी का जीवन जिएं. तर्क, तथ्य, मनोरंजन और निर्भीकता से भरी पत्रिकाएं पढ़ते रहिए ताकि जिंदगी खुशहाल रहे, सफल रहे.

सरिता ₹ 50 गृहशोभा ₹ 50 मुक्ता ₹ 30 सरस सलिल ₹ 10 मनोहर कहानियां ₹ 50 सत्यकथा ₹ 40

आज ही समाचारपत्र विक्रेता से मांगें या वार्षिक ग्राहक बनने की सूचना पाने के लिए ईमेल भेजें. circulation@delhipress.in

डिजिटल एडिशन भी उपलब्ध

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

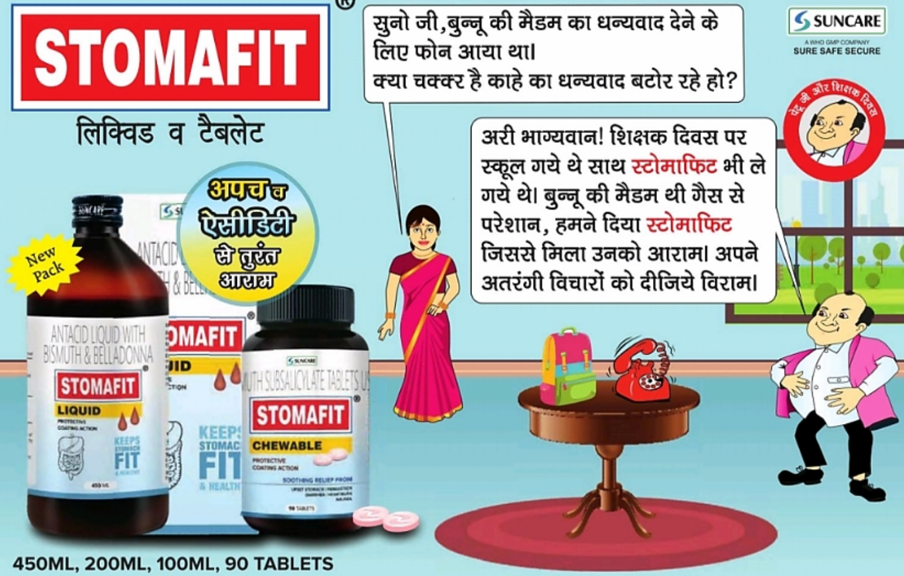
सुनो जी, बुन्नू की मैडम का धन्यवाद देने के लिए फोन आया था।
क्या चक्कर है काहे का धन्यवाद बटोर रहे हो?
अरी भाग्यवान! शिक्षक दिवस पर स्कूल गये थे साथ स्टोमाफिट भी ले गये थे। बुन्नू की मैडम थी गैस से परेशान, हमने दिया स्टोमाफिट जिससे मिला उनको आराम। अपने अतरंगी विचारों को दीजिये विराम।
अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम
New Pack
पेट जी और शिक्षक दिवस
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT LIQUID
STOMAFIT CHEWABLE

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

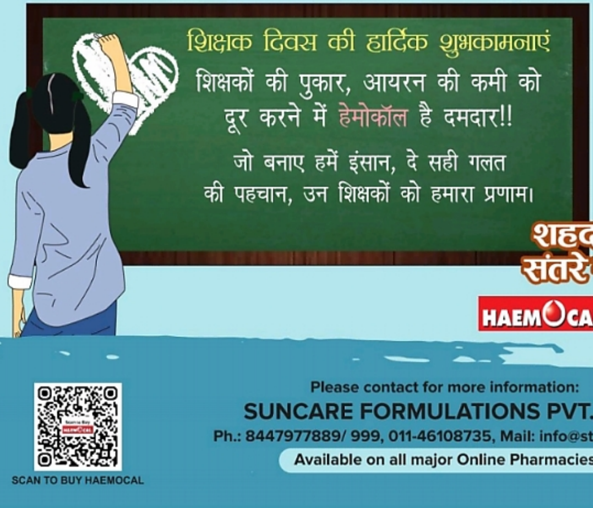
शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
शिक्षकों की पुकार, आयरन की कमी को दूर करने में हेमोकॉल है दमदार!!
जो बनाए हमें इंसान, दे सही गलत की पहचान, उन शिक्षकों को हमारा प्रणाम।

New Pack
HAEMOCAL
Iron Tonic with Folic Acid
शहद सा गाढ़ा संतरे सा स्वाष्टि

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध(450ml)

SCAN TO BUY HAEMOCAL

Please contact for more information:

SUNCARE FORMULATIONS PVT. LTD.

Ph.: 8447977889/ 999, 011-46108735, Mail: info@stomafit.com

Available on all major Online Pharmacies

SCAN TO BUY STOMAFIT